॥ श्री हरिः ॥

आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गिय वैष्णव परिषद

श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट

कीर्तन सुबोध

पुष्टिभक्तिसंगीत पाठ्यक्रम. नं. ३

॥ श्री हरिः ॥

नि. ली. पू. पा. गो. सोमयाजी
श्री प्रथमेशजी (रणछोडाचार्यजी) द्वारा संस्थापित
आंतरराष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषदके प्रमुख
श्री इन्द्रकान्तभाई परीखका भावोद्गार

कीर्तनभक्तिका प्रकार पुष्टिमार्गीय सेवा प्रणालीका प्रमुख अंग है, जिसमें प्रभुके रागात्मक के साथसाथ लीलात्मक स्वरूपकी अभिव्यक्ति है। जिस प्रकार मर्यादामार्गमें वैदिक मंत्रोच्चारसे परमात्माकी स्तुत्यात्मक पूजापद्धतिका विनियोग किया जाता है उसी प्रकारसे पुष्टिभक्तिमार्ग में भगवद् गुणानुवादात्मक महत् भगवदीय कृत कीर्तनगानसे पुष्टिपूर्णलीलापुरूषोत्तमके श्रीविग्रहात्मक स्वरूपको प्रातः जगानेसे ले कर शयनपर्यन्तकी अष्टयाम सेवाका प्रकार; नित्य पदोंसे, वर्षोत्सवके कीर्तनोंसे, वसंत-धमारके पदोसे, बधाई एवं विशेष उत्सवों के कीर्तनादिसे किया जाता है। कीर्तनकी रसानुभूति और प्रभुलीलाका अनुभव भगवत्कृपासे ही प्राप्त किया जा सकता है। चित्तको प्रभुके साथ जोडने का शीघ्र और सरलतम उपाय भगवद्लीलाका अवगाहन है। प्रत्येक वैष्णव अपने सेव्यश्री... को ऋतुक्रमानुसार राग व तालबद्ध रूपसे कीर्तन गा कर रीझा सके ऐसे उद्देश्यसे पूज्यपाद श्री निकुंजलताबेटीजी संस्थापित ''श्री गुसांइजी चेरीटेबल ट्रस्ट'' के संयुक्त तत्वाधानमें 'कीर्तन प्रवेशिका' से ले कर 'कीर्तन विशारद' तकका पंचवर्षीय अभ्यासक्रम तैयार किया है। संप्रदायमें गाये जानेवाले सभी रागोंकी जानकारी और स्वरलीपि सहित कीर्तन इस अभ्यासक्रममें समाविष्ट है। वैष्णव स्वयं ही कीर्तन शिक्षण पा सके इसलिए रागोंकी जानकारी, स्वरलीपि एवं तालवाद्यके ठेकों के साथ कीर्तन ओडियो केसेटमें गायें हैं। ''कीर्तन प्रवेशिका'' और ''कीर्तन प्रबोध'' दोनोंका लाभ अनेक वैष्णवोंने ले कर परीक्षाएं दी हैं, जिन्हें प्रमाणपत्र भी दिये गये है। तृतीयवर्षकी ''कीर्तन सुबोध'' पुस्तिका एवं ओडियो केसेट प्रगट करते हुए अत्यंत आनंदकी अनुभूति हो रही है। आशा करतें हैं कि वैष्णव समुदाय इससे लाभान्वित हो कर कीर्तन सीखें, परीक्षाएं दें और अपने प्रभुको रीझाए।

Indrakant

॥ श्री हरिः ॥

आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद
श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट

कीर्तन सुबोध

पुष्टिभक्तिसंगीत पाठ्यक्रम नं. ३

✻ *कीर्तनकार* ✻

श्री जमनाप्रसादजी शर्मा

✻ *भावोद्बोधन* ✻

श्रीमती कल्पनाबेन शाह

✻ *प्रकाशक* ✻

आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद
श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट
जी/२, सीताराम बिल्डींग, पल्टन रोड, मुंबई - ४०० ००१.

✻ *मुद्रक* ✻

श्रीजी प्रिन्टर्स
१३३, वी. पी. रोड,
नाथालाल भुवन, ३रा मजला,
मुंबई - ४०० ००४.
फोन : ३८५ ९६०३

(सर्व हक्क प्रकाशकके स्वाधीन)

अनुक्रमणिका

१) पूज्यपाद गोस्वामी आचार्यवर्योंके आशिर्वचन

२) प्रास्तविक - पूज्यपाद श्री निकुंजलता बेटीजी १
३) संगीत विषयक जानकारी ४
४) ताल विभाग ११
५) वाद्य परिचय १४
६) राग ललित १६
    (अ) कमलसी अखियाँ लाल तिहारी १७
    (ब) भयो श्री गोकुल जयजयकार १८
७) राग नट २०
    (अ) नातर लीला होती जूनी २१
    (ब) प्रीतम प्रीत ही ते पैये २३
८) राग अड़ाना २५
    (अ) तेरी भ्रोंहकी मरोरनतें २६
    (ब) आज बधाई मंगलचार २८
९) राग कान्हरा ३०
    (अ) बसो मेरे नैनन में दोऊ चंद ३१
    (ब) यह धन धर्मही ते पायो ३२
    (क) प्रकटे पुष्टि महारस देन ३५
१०) राग नायकी (कान्हरा) ३६
    (अ) आनंद बधावनो नंद महरके धाम ३७
    (ब) तेरो मन गिरिधर बिन ना रहेगो ३९
११) राग काफी ४१
    (अ) देख्यो री मैं श्याम स्वरूप ४२
    (ब) नेह लाग्यो मेरो श्यामसुन्दरसों ४४
१२) राग जैजैवंती ४७
    (अ) मचकि मचकि झुले ४८
    (ब) माई आज तेरे साँवरेने ५०
१३) राग केदार ५३
    (अ) तरूवर छांह तीर यमुनाकी ५४
    (ब) अद्‌भूत नट भेख धरे ५६
१४) राग बिहाग ५९
    (अ) सखियन रूचि रूचि सेज बनाई ६०
    (ब) जे जन शरण आये ते तारे ६१
    (क) जुग जुग राज करो श्री गोकुल ६४
१५) राग मांड ६५
    (अ) हमारे श्री विठ्ठलनाथ धनी ६५
    (ब) बडो धन हरिजनको हरिनाम ६७

१६) जीवन चरित्र

    (अ) श्री कुंभनदासजी ६८
    (ब) श्री चतुर्भुजदासजी ७३

श्री हरिः

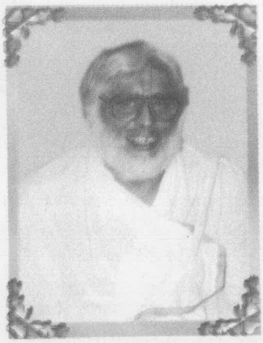

गोस्वामी श्याम मनोहर

पुष्टिभक्तिसंगीत अभ्यासक्रम (तृतीय वर्ष) की पुस्तकका प्रकाशन होने जा रहा है यह जान कर हार्दिक प्रसन्नता हुई. प्रत्येक पुष्टिमार्गीयके घरमें बिराजमान भगवत्स्वरूपकी सेवाको श्री कृष्णकी व्रजलीलाकी भाव-भावनाओंसे भरपूर बनाना हो तो हमारे भगवल्लीला लहरियोंमें निरन्तर हिलोरे लेनेवाले प्राचीन भक्तकविओंकी वाणी -पदोंका गान एक सरल, सक्षम और फलद उपाय है. मुझे आशा है कि इस पाठ्यक्रमसे सभी भगवत्सेवारसिकों की सेवाको लीलारसात्मिका बनानेमें एक महती सेवा पुष्टिमार्गकी सिद्ध होगी.

६३, स्वस्तिक सोसायटी, चौथा रास्ता, जुहू स्कीम,
बम्बई ४०० ०५६ फोन : ६१४४३२६

''अडेल''
महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य मार्ग, नयाशहर, किशनगढ - ३०५ ८०२.

|| श्री हरिः ||

|| श्री गोपीजनवल्लभाय नम : ||

नि. लि. पू. पा. गोस्वामी श्री मुरलीधरलालजीमहारात्मज

श्री. श्यामसुंदरजी (त्रिभंगीरायजी)

(चांपासेनी - जामखंभालिया - बोरीवली)

दूरध्वनी :
१०२, तेजल एपार्टमेंट,
सिम्पोली रोड, बोरीवली (पश्चिम),
बम्बई - ४०० ०९२.

दूरध्वनी : ८०५ ०१ १७
५०, गंगा निवास,
एस. वी. रोड, बोरीवली (पश्चिम),
बम्बई - ४०० ०९२.

मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है की आज 'अन्तर्राष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद्' एवं 'श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट' के संयुक्त तत्त्वाधान में पुष्टिभक्ति संगीत अभ्यासक्रम के अन्तर्गत 'कीर्तन सुबोध' भाग तृतीय का प्रकाशन होने जा रहा है । वर्तमान समय में 'पुष्टिभक्ति कीर्तन' की लुप्त प्राय हो रही शैली को जीवित रखने के लिये प्रयास किया जा रहा है, यह महत्वपूर्ण वस्तुतः सराहनीय है । मेरी ओर से इस अति अनिवार्य कार्य की सम्पूर्ण सफलता की अनेक शुभकामनाओं के साथ शुभाशिर्वाद ।

भावत्क :

गो. श्यामसुन्दरजी - महोदय ।

गो. श्यामसुन्दरजी महोदय
(चांपासेनी - बोरीवली)

इति शुभम्

गो. चन्द्रगोपाल

"राधाकृष्णकुंज" - ४१/१, श्रीनगर सोसायटी,
एच रोड, अकोटा रोड, दिनेश मीलके पीछे,
वडोदरा - ३४० ०२०.

फोन : ३५५४१५

'आन्तर राष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद्' एवं समादरणीया **पू. श्री निकुंजजीजी** द्वारा प्रस्थापित **'श्री गुसांईजी चेरिटेबल ट्रस्ट'** द्वारा संचालित पुष्टिभक्ति संगीत अभ्यासक्रमके परिक्षार्थीजनों के तृतीय वर्ष में अध्ययनार्थ **'कीर्तन सुबोध'** अभ्यास पुस्तिका प्रकाशित की जा रही है इस अवसर पर मैं अपनी हार्दिक अनेक - अनेक शुभकामनाएं इसके द्वारा प्रकट करता हूं। पू. श्री निकुंज जीजी एवं उनके आदेश - प्रेरणासे दोनों संस्थाओं के कार्यकर्तागण पुष्टिमार्गीय कीर्तन प्रशिक्षण के क्षेत्रमें जिस प्रकार से परिश्रम ले रहे हैं इस से यह आशा की जा सकती है कि आगे भविष्यमें भी भगवत्सेवामें वैष्णवजनोंकी कीर्तनो में प्रवृत्ति अवश्य बनी रहेगी व इससे वैष्णव समाज लाभान्वित होगा। पुनश्च इस भगीरथ कार्यके लिये मेरी अनेक शुभकामनाएं.

वि. सं. २०५६, पोष शु १०
रविवार, दि. १६-१-२०००
बम्बई

भावत्क :
(गो. चन्द्रगोपाल - वडोदा)
गोस्वामी चन्द्रगोपाल

॥ श्री हरिः ॥

©: (०२६५) ४२३३२२
गो. श्री द्वारकेशलालजी महाराज
‘षष्टपीठ’
श्री कल्याणरायजी मंदीर, शेठशेरी,
बाजवाडा, वडोदरा-३९० ००१. (गुजरात).
ता. २७/१०/९९

सर्व वल्लभीयजन,

सस्नेह शुभाशीष,

पुष्टि-भक्ति संगीत अभ्यास क्रम की (तृतीय वर्षीय) पुस्तिका प्रकाशीत होने जा रही है। यह अवगत कर अन्तर में अत्यंत आनंदानुभूति हुई।

स्वमार्ग में ऐसे पुष्टि पुरूषोत्तम भक्त के हृदय में स्थित सहज स्नेह, भाव, उर्मी और यथा-अधिकार सेवा सौकर्यके अनुकूल ही हमारे निज प्रभु जागते है, श्रृंगार धारण करते है, अरोगते है, और पोढते है। नित्य, उत्सव और ऋतु सेवा - त्रिविध प्रकार की वार्षिक सेवा क्रम में अष्टसखा एवं अष्टछापेत्तर भगवदीय जनो के अनुभुतिरुप कीर्तनों को हम निज-प्रभु के सन्मुख जब अभिव्यक्त करते है तब हमारे सहजभावों के संग इन पूर्व भगवदीय के हृदयस्थ भावों का संपूट लगने से पुष्टि-भक्त का सेवकीय आनंद द्वि-गुणीत हो जाता है।

अतः उस कीर्तन-भक्ति का आनंद सर्व सुलभ हो सके एतदर्थ आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद एवं श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट, उभय संस्थाके माध्यम से जो अभ्यासक्रम चलाया जा रहा है वो सांप्रत समय की अतिविशिष्ट आवश्यकता है। इसकार्य से स्वमार्गीय कीर्तन परंपरा को एक नया स्वरूप और दीर्घआयुष्य प्रदान की जा सकेगी। समग्र पाठ्यक्रम को मेरी हार्दिक शुभकामना है। एवं शत् शत् शुभ आशिषः है।

भवदीय,

गो. द्वारकेशलाल

गो. श्री द्वारकेशलालजी

।। श्री बालकृष्णः प्रभुर्विजयतेतराम् ।।

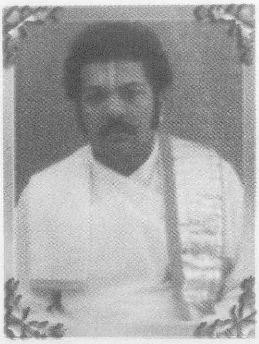

गोस्वामी प्रशान्त
गोविन्द भवन, बृहन्मन्दिर,
भुलेश्वर, मुम्बई - २.
फोन : २४२ २९ ५१

१२ जनवरी २०००

“ जो जन अष्टछाप गुन गावत ।
चित निरोध होत ताही क्षण हरि लीला दरसावत ।।”

भौतिक जीवन की सङ्कुचित नश्वर परिधि से उपर उठकर भगवल्लीला गान को अपना एकमात्र लक्ष्य मानने वाले ये अष्टछाप भक्त कविरत्न, प्रभु प्रेम की शाश्वत निश्चिन्त भावना के साथ जिस दिव्य भाव लोक में विचरण करते हैं, वह केवल अनुभव गम्य है; उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। उसके लिए तर्क की अपेक्षा श्रद्धा और बुद्धि की अपेक्षा हृदय की अधिक आवश्यकता है।

“अचिन्त्याः खलु ये भावाः न तांस्तर्केणयोजयेत्”

अतः इन भक्तकवियों का एकमात्र पुनीत कर्त्तव्य यही था कि वे नित्य एवं नैमित्तिक अवसरों पर आनन्दकन्द श्री गोवर्धननाथजी के सम्मुख कीर्तन सेवा करें। आगे चलकर पुष्टिमार्गीय सेवा प्रतिष्ठित हो जाने पर देशव्यापी सभी स्थानों में जहाँ-जहाँ पुष्टिपुरूषोत्तम बिराजते थे, तत्-तत् स्थानों में यह कीर्तन सेवा पद्धति अपनायी गयी और इस प्रकार सभी अष्टसखाओं की रचना उनकी भावानुभूति-सङ्गीत-साहित्य तथा कीर्तन सेवा पद्धति से सम्पूर्ण सम्प्रदाय में एकरसता-एकरूपता आ गयी।

भविष्य में भी पुष्टिभक्ति की रसधारा निरन्तर भक्तजनों के हृदय में प्रवाहित होती रहे और इससे वे भक्तजन **‘किमपि परितश्चार्द्रार्द्र’** होते रहें, एतदर्थ श्रीगुसाँईजी चेरीटेबल ट्रस्ट तथा आंतर राष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद जो कार्य कर रहा है वह अत्यन्त प्रशंसनीय है।

विशेष में श्रीजमनाप्रसाद शर्मा, श्रीनिर्मलभाई, कु. ख्याती एवं सभी कार्यकर्ताओंको मेरे हृदयपूर्वक आशीर्वाद।

भवदीय,

प्रशान्तः

गो. प्रशान्तः

पूज्यपाद श्री निकुंजलता बेटीजी

II Shree Govardhandharan Vijayate II
II Shree Balkrushna Prabhu Vijayate II

Shree Nikunjalata Betiji

Rajneelam,
Flat No. A/4, Ground Floor,
Dr. Rajabli Patel Road,
Bhulabhai Desai Road,
Bombay - 400 026.

जो सुख होत गोपाल गाये

पुष्टिभक्ति प्रशिक्षणके अभ्यासक्रममें पाठ्यक्रम नं. १ ''कीर्तन प्रवेशिका'' एवं पाठ्यक्रम नं. २ ''कीर्तन प्रबोध''के बाद अब पाठ्यक्रम नं. ३ ''कीर्तन सुबोध'' प्रस्तुत करते हुअे बडी प्रसन्नता हो रही है । अगले दो पाठ्य क्रमोंकी परीक्षाओंमें बडे उत्साहसे भाग लेनेके लिये आप सभीको मेरे हार्दिक धन्यवाद ।

अगले दो पाठ्यक्रमोंसे आपने कुछ राग, अलंकार, नाद, ध्वनि, थाट-मेल, ताल एवं कुछ वाद्योंकी जानकारी प्राप्त कर ली ।अब इस तृतीय वर्ष अभ्यासक्रममें कीर्तनगानमें अति उपयोगी वाद्य तानपूरा विषयक जानकारी, कुछ नये ताल और अष्टसखाओमेंसे दो सखा - श्री कुंभनदासजी एवं श्री चतुर्भुजदासजीका संक्षिप्त चरित्र एवं रागोंके बारेमें विशेष जानकारी दी गई है ।

हमारे यहाँ कीर्तन-गानमें रागोंका बडा ही महत्व है । सभी पदगान शास्त्रीय पद्धतिसे नियत रागोंमें गाये जाते हैं । रागोंका अलग अलग विशिष्ट स्वरुप है । दिन-रातके विविध समयके वातावरणके अनुरुप अलग अलग राग अलग अलग समय पर गाये जाते हैं । मध्यरात्रिसे लेकर दिनके मध्यान्ह तक गाये जानेवाले रागोंका प्रातः सेवाकी प्रणालीमें एवं मध्यान्हसे लेकर मध्यरात्रि तक गाये जानेवाले रागोंका सायं सेवा प्रणालीमें समावेश किया गया है । श्रीकी सेवामें प्रातःकालके संधिप्रकाश राग मंगला समय एवं सायं संधिप्रकाश राग भोग एवं संध्यार्तिमें गाये जातें हैं ।

हमारे कीर्तन गानकी विशेषता यह है कि जिस प्रकार भोग (सामग्री) और शृंगारमें ऋतु अनुसार परिवर्तन होता रहता है, तदनुसार कीर्तन गानके रागमें भी ऋतुओंके परिवर्तन होते रहते हैं । शीतकालमें गाये जानेवाले राग अधिकतर उष्ण प्रकृतिके होते हैं । जो विशेष रुपमें हेमन्त, शिशिर ऋतुमें ही गाये जाते हैं । जैसेकि ललित, मालकौंश, परज, सोहनी, धनाश्री, आशावरी, टोडी, नायकी-यह राग केवल शीतकालमें गाये जाते हैं । जबकि विशेष रुपसे उष्णकाल (ग्रीष्म ऋतु)में शीत प्रकृतिके राग गाये जाते हैं । जैसेकि बिभास, सारंग, हमीर, सोरठ,

केदार - ये राग विशेषकर ग्रीष्म ऋतुमें गाये जाते हैं । वर्षा ऋतुमें वर्षाके अनुरुप मल्हार राग गाया जाता है । शीतकालमें कान्हराके विविध प्रकार, ग्रीष्ममें सारंगके विविध प्रकार और वर्षामें मल्हारके विविध प्रकार विशिष्ट रुपसे गाये जाते हैं । वसंतके दिनोंमें वसंत राग एवं तत्काल अनुरुप राग गाया जाता है । अश्विन मासमें शरद ऋतुके प्रधान राग गाये जाते हैं ।

अभ्यासियोंको यह ध्यानमें रहे कि उपरोक्त रागोंके अलावा और रागभी तत् तत् ऋतुमें गाये जाते हैं, जो कि हमारी कीर्तन पुस्तकोंमें दिये गये हैं । लेकिन उपरोक्त राग उस विशेष ऋतुमें विशेष रुपसे गाये जाते हैं ।

हमारे यहाँ अष्टायाम सेवामें प्रभुके सुखका कितना ख्याल रखा गया है कि गर्मीकी ऋतुमें प्रभुको सभी प्रकारसे सीतोपचार किया जाता है, फिर भी स्नानयात्राके दिन जब श्री प्रभुको अगले दिनके भरे हुए सुगन्धित शीतल जलसे स्नान कराया जाता है तब श्रीको अति शीत न लगे इसलिये शीतकालीन उष्णराग तोडीमें पद गान होता है ।

प्रभुकी सेवामें शीतकालकी मर्यादा देवप्रबोधनीसे वसंत तक और उष्णकालकी मर्यादा अक्षयतृतीयासे रथयात्रा तक मानी गई है । रथयात्रासे वर्षा ऋतुका प्रारंभ माना गया है ।

सम्प्रदायकी ऋतु अनुसार सेवा प्रणालीकी एक और यह भी विशिष्टता है कि प्रत्येक ऋतुके आरंभके पूर्व कुछदिन ऋतु आगमन माना जाता है । और दो ऋतुओंके बीचका समय ऋतु संधिकालका है । इस ऋतु संधिकालमें ऋतु आगमनके विशिष्ट पद एवं राग गाया जाता है । वसंत पंचमीके चार दिन पहले (माघ शुक्ल १ से ४) शीत-वसंतकी संधिकालमें वसंत आगमनके रुपमें वसंतबहारके पद गाये जाते हैं । होरि डोलके दूसरे दिनसे चैत्र शुक्ल १५ तक वसंत ऋतु होते हुए भी ग्रीष्म ऋतु आगमन यानिकि वसंत-ग्रीष्मका संगम माना जाता है । इस समय प्रायः शीतोष्ण प्रकृतिके नूर-सारंग, मधुमाद-सारंग, बिलावलके कुछ प्रकार एवं नट, गौरी, केदार आदि राग गाये जाते हैं ।

ज्येष्ठ शुक्ल पूनमके बाद वर्षा ऋतुका आरंभ माना जाता है । अतः स्नानयात्रासे रथयात्रा तक ग्रीष्म-वर्षाकि संधिकालमें सुहा, सुघराई, सोरठ इत्यादि रागमें पदगान होता है ।

इस तरह आचार्यजी श्री महाप्रभुजी एवं प्रभुचरण श्री गुसांईजीने अष्टयाम

सेवामें प्रभुके सुख एवं प्रसन्नताका ध्यान रखते हुए समय समयकी लीलाओंके पद गान समयानुंसार एवं ऋतु अनुसार विभिन्न रागोंमें कितनी सुंदरतया सुनियोजीत किया है । यही हमारे कीर्तन गानकी विशेषता है ।

कीर्तन गान करनेवालोंको चाहिये कि प्रत्येक पद परंपरागत बंदिश अनुसार नियत राग और तालमें गाने जाने चाहिये । जो राग आप सीखें उस रागके अलंकार पलटाओंका ठीक अभ्यास करना चाहिये । स्वरका भी रियाज करना चाहिये, जिससे वे रागके कीर्तन-गान सुन्दरतया कर सके । सुव्यवस्थिततया रागोंमें भावसभर लीलागानरुप कीर्तन गानसे हमारे प्रभु अति प्रसन्न होते हैं और हमारे चित्तका निरोध प्रभुमें सहज हो जाता है । इसी उद्देश्यको लेकर यह पाँच सालका अभ्यासक्रम जो बनाया गया है जिसमें हर पाठ्यक्रमकी पुस्तिकाके साथ साथ कैसेट भी बनाई गई है । जिसका उपयोग करके आप अच्छी तरह कीर्तन सीख सकें और कीर्तनकी एवं कुछ शास्त्रीय संगीतकी विशेष जानकारी प्राप्त कर सकें । आज हमारे पास कीर्तन सिखानेवाले हर जगह मिलते नहीं है । ऐसी परिस्थितिमें कीर्तन सिखनेके इच्छुक किसीकी सहायताके बिना भी इन पुस्तिकाओं एवं कैसेट द्वारा थोडी ज्यादा महेनत करके अपने आप कीर्तनगान सिखकर अपने श्रीको प्रसन्न कर सकतें हैं । और हाँ ! आप कहीं भी, किसी भी गाँव या शहरमें रहते हो, हमारी परीक्षाएं दे सकते हो ।

इस अभ्यासक्रमको अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रदान कर हमें बल दिया है ऐसे सभी माननीय आचार्यवर्योंके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूं ।

अन्तमें इस पुस्तिका एवं कैसेट तयार करनेमें जिन्होंने काफी महेनत की है ऐसे कीर्तनकार श्री जमुनाप्रसादजी शर्मा एवं कल्पनाबेन शाह, नयनाबेन, निर्मलभाई एवं कु. ख्याति द्वारकादास, मनहरभाई श्रोफ एवं अन्य सभी सहकार देनेवालोंको धन्यवाद देती हूं ।

इन पुस्तिकाओंमें कीर्तनादि जानकारी एवं परीक्षाओंमें परीक्षक रुपसे सहयोग देनेवाले कीर्तनकार श्री श्यामसुंदर जोषी, कीर्तनकार श्री मुरारीलालजी चतुर्वेदी, श्री त्र्यंबकभाई, श्री भगवतीप्रसाद शर्मा, भारतीय संगीत समितिके श्री केशवदेव जोषी, श्री विदुरप्रसाद गौतम, इन सभीको मेरे हार्दिक धन्यवाद देती हूं ।

निकुंजलता बेटीजी
सूरत, बड़ौदा, मुंबई

संगीत विषयक जानकारी

द्वितीय वर्षकी ''कीर्तन प्रबोध'' पुस्तकमें आपने ध्वनि, नाद, श्रुति, स्वर, सप्तक और सप्तकसे भिन्न-भिन्न थाट या मेलकी जानकारी प्राप्तकी। इस पुस्तकमें आप रागके बारेमें जानकारी प्राप्त करेंगे।

राग :-

''ध्वनिविशेषस्तु स्वर - वर्णविभूषित: ।
रंजको जनचित्तानां स राग: कथिता बुधै: ॥''

''अभिनव राग मंजरी'' ग्रंथ के इस श्लोक से रागकी व्याख्या स्पष्ट होती है। ध्वनिकी उस विशिष्ट रचनाको जिसमें स्वर तथा वर्णों के कारण सौन्दर्य हो, जो मनुष्यके चित्तका रंजन करे उसे राग कहते हैं। रागका अर्थ प्रेम भी है। जिन स्वर समूहके गायनसे मनको आनंद मिले और हृदयमें प्रेम प्रकट हो ऐसे रंजक स्वरसमूहको राग कहते हैं।

रागकी उत्पत्ति :-

प्रत्येक राग किसी न किसी मेल या थाटसे उत्पन्न होता है। रागमें रंजक स्वर समूहके साथ ही कुछ विशेष नियमोंके पालनकी भी आवश्यकता होती है। जैसे-

१) किसीभी थाटमें से ही रागकी उत्पत्ति होती है।
२) रागमें कमसे कम पांच स्वर होने चाहिए।
३) रागमें आरोह और अवरोह होने चाहिए।
४) रागमें ''षड़ज'' स्वर वर्जित नहीं होता है।
५) किसीभी रागमें ''मध्यम'' और ''पंचम'' स्वर दोनों एक साथ वर्जित नहीं होते हैं।
६) सभी रागोंके वादी, संवादी, स्वर होते हैं। प्रत्येक रागमें उन्हीं स्वरोंको विशेष महत्त्व दिया जाता है।

रागोंकी जाति :-

किसी भी थाटमें से राग बनाने के लिए पांच, छ: या सात स्वर जरूरी हैं। इन्ही स्वरोंके आधार पर रागकी जाति निश्चित होती है। जाति मुख्यतया तीन प्रकारकी हैं।

१) **औड़व** :- जिस रागके आरोह-अवरोह दोनोंमें पांच स्वरोंका उपयोग होता है उस रागको औड़व जातिका माना जाता हैं। उदाहरणतया मालकौंस, विभास, मालव इत्यादि।

२) **षाड़व** :- जिस रागके आरोह-अवरोह दोनोंमें छः स्वरोंका प्रयोग होता है उस रागको षाड़व जातिका मानतें हैं। जैसे ललित, नायकी कान्हरा, बहार, इत्यादि।

३) **सम्पूर्ण** :- जिस रागके आरोह-अवरोह दोनोंमें सातों स्वर लगते हैं उसे सम्पूर्ण जातिका राग कहतें हैं। जैसे भैरव, ईमन, काफी, इत्यादि।

कई राग एसे हैं जिनके आरोह तथा अवरोहके स्वर भिन्न होते हैं। ऐसे रागोंकी जाति पहचाननेके लिये संगीतज्ञोंने प्रत्येक जातिकी तीन-तीन उपजातियाँ बनाई हैं जो हम निम्नलिखित कोष्टकसे सरलतासे समझ सकते हैं।

औड़व जाति (पांचस्वर)

औड़व-औड़व	**औड़व-षाड़व**	**औड़व-सम्पूर्ण**
(आरोह-अवरोह दोनोंमें पांच स्वर जैसे मालकौंस)	(आरोहमें पांच स्वर अवरोहमें छः स्वर जैसे सूर मल्हार)	(आरोहमें पांच स्वर अवरोहमें सात स्वर जैसे बिहाग)

षाड़व जाति (छः स्वर)

षाड़व-औड़व	**षाड़व-षाड़व**	**षाड़व-सम्पूर्ण**
(आरोहमें छः स्वर अवरोहमें पांच स्वर जैसे जयराज)	(आरोह-अवरोह दोनोंमें छः स्वर जैसे ललित)	(आरोहमें छः स्वर अवरोहमें सात स्वर जैसे अल्हैया -बिलावल)

सम्पूर्ण जाति (सात स्वर)

सम्पूर्ण-औड़व	**सम्पूर्ण-षाड़व**	**सम्पूर्ण-सम्पूर्ण**
(आरोहमें सात स्वर अवरोहमें पांच स्वर जैसे नट)	(आरोहमें सात स्वर अवरोहमें छः स्वर जैसे दरबारी,कान्हरा मियां मल्हार)	(आरोह-अवरोह दोनोंमें सात स्वर जैसे भैरव)

कुछ रागमें स्वर, गति और चलन वक्र रूपसे होते हैं। उदाहरणतया

राग तिलक कामोद

आरोह :- **सारेगसा, रेमपधमप, सां**
अवरोह :- **सांपधमग, सारेग, सानि़**

और अल्हैया बिलावल

आरोह :- **सा, गरेगप, ध, नी, सां**
अवरोह :- **सांनीधप, धनीधप, मगम, रे, सा**

इस प्रकार इन जातियोंके रंजक स्वर समूहों से अनेकविध राग उत्पन्न होते हैं। इस मेल या थाट व्यवस्था पद्धतिको राग की जन्य - जनक पद्धति कहा जाता है - जो आधुनिक है। जब कि प्राचिन समयमें एवं श्री वल्लभाचार्यजीके समयमें "राग कुटुंब व्यवस्था" प्रचलित थी। इस पद्धतिमें छः राग और प्रत्येक रागकी पांच-पांच पत्नी मिलाकर ३६ राग-रागिनियोंसे और कई रागोंकी उत्पत्ति हुई। अतः अष्टछाप भक्त-कवियोंने इसी राग-रागिनी पद्धतिको दृष्टि समक्ष रखकर रागोंका विनियोग प्रभु सेवार्थ किया था "खटऋतु" की वार्तासे इसका समर्थन मिलता है। अष्टसखाओंके कीर्तनमें भी इस राग-रागिनी पद्धतिका उल्लेख मिलता है। उदाहरणार्थ सूरदासजीका पद, "सब दिन तुम व्रजमें रही" में छः राग, छः रागिनी, ताल, तान, बंधानका वर्णन मिलता है। इस प्रकार अष्टछाप घरानेकी कीर्तनप्रणालिमें श्री गोकुलनाथजी और श्री हरिरायजीके समय तक राग संख्या बढ़कर ८४ हो गयी जिनका विनियोग प्रभु सुखार्थ किया जाता है।

गायन समय :-

हर रागका गायन समय निश्चित है। इसलिए उसी समय गाये जाये तो वह अधिक प्रभावशाली रहता है। महाप्रभु श्री वल्लभाचार्यजी एवं प्रभुचरण श्री गुसांईजीने श्रीजीकी सेवामें राग-भोग-श्रृंगार प्रणालि का क्रम निश्चित किया है। उसमें प्रभुके सुखका सूक्ष्मातिसूक्ष्म ख्याल करते हुए अष्टयाम सेवामें रागोंका गायन ऋतु समयानुसार निश्चित किया है।

नित्य एवं ऋतुओमें गाये जानेवाले कीर्तनके रागोंका संक्षिप्त विवरण

- निकुंजलता बेटीजी

हमारे यहाँ श्रीजी दैनिक (नित्य) सेवामें सुबह जगानेसे लेकर सायं पोढाने तक जो कीर्तन गान होता है उसमें दिनके एवं ऋतुके समयानुसार परिवर्तन होता रहता है। नियत समयमें नियत रागमें ही पदगान होता है।

शीतकाल

शीतकालमें पदगान निम्न रागोंमें होता है।

भैरव, रामकली, ललित, मालकौंस, परज, जेतश्री, सोहनी, खट, धनाश्री, आशावरी, टोडी, पूर्वी, नट, गौरी, नायकी, कान्हरा, कल्याण, बिहाग इत्यादि।

इनमेंसे ललित, मालकौंस, परज, जेतश्री, सोहनी, धनाश्री आशावरी, तोडी, नायकी- यह राग केवल शीतकालमें ही गाये जाते हैं।

मागसर कृ. १० यानि कि श्रीगुसांईजीके उत्सवके दूसरे दिनसे उष्णकालके राग सारंग उत्सवके सिवाय तथा अन्य उष्णकालीन राग नहीं गाये जाते हैं।

शीतकालमें जगानेके, कलेवाके एवं मंगलादर्शनके पद भैरव, रामकली एवं मंगला, शृंगारमें खंडीताके पद ललित, और मालकौंस रागमें गाये जाते हैं।

भोजन के पद एवं राजभोग सन्मुख हिलग, पनघट या उसी दिनके शृंगारकी भावनाके पद राग धनाश्री, आशावरी, टोडीमें गाये जाते हैं।

सायं भोग दर्शनमें नट, संध्यार्तिमें पूर्वी एवं गौरी रागमें आवनी एवं शृंगारभावानुसार पद गाये जाते हैं। ब्यारू (शयनभोग-अर्ध समय)के पद कान्हरा, ईमनमें; शयन दर्शनमें सन्मुख कान्हरा, अडाना, नायकी, बिहागमें; मानके पद कान्हरा, बिहागमें; पोढनेके पद बिहाग रागमें गाये जाते हैं।

वसन्त

माघ शु. १ से माघ सु. ४ तक वसंत आगमनके वसंतबहारके पद मालकौंसमें गाये जाते हैं। माघ शुं. ५ - वसंतपंचमीके दिनसे माघ शुं. १५ (होरि डांडा) तक

सभी समयमें वसंत रागमें पदगान होता है। खेल दर्शनमें (राग वसंतकी आलापचारीके बाद) श्री गुसांईजी रचित अष्टपदी ''हरिरिह व्रजयुवती शत संगे'' कुञ्ज एकादशी तक गाई जाती है। माघ शु. १५ होरीडंडा रोपण (सुबह या सायं) से धमार शुरू होती है। राजभोग दर्शनमें बिलावलकी धमार एवं तोडी, धनाश्री, आशावरी इत्यादि राग एवं सायं शयनमें कल्याण एवं कान्हरामें धमार गाई जाती है। श्रीनाथजीके पाटोत्सव (माघ कृ. ७) से हर राग मुक्त हो जाते हैं। राजभोग दर्शनमें सारंग रागकी धमार शुरू होती है। इनदिनों काफी रागभी विशेष गाया जाता है। कुञ्ज एकादशी से धमार बंध होती है और डोलके पद डोल तक गाये जाते है।

उष्णकाल

उष्णकालमें गाये जानेवाले राग -

बिमास, देवगंधार, रामकली, बिलावल और उसके प्रकार, सारंग, और उसके प्रकार, (सामंत सारंग, नूरसारंग, गौड सारंग, मधुमाद सारंग, शुद्ध सारंग, वृंदावनी सारंग इत्यादि), पूर्वी, सोरठ, हमीर, अडाना, कान्हरा, ईमन, केदार, कल्याण, बिहागरा इत्यादि।

इनमेंसे बिभास, सारंग और उसके प्रकार, सोरठ, हमीर, केदार-ये राग विशेष रूपमें उष्णकालमें गाये जाते हैं।

जगायवेके, कलेवाके एवं मंगला दर्शन के पद राग भैरव, बिभास एवं रामकलीमें गाये जाते हैं। मंगला दर्शन एवं शृंगारमें भैरव, बिलावल, बिमास, रामकलीमें खंडिता के पद गाये जाते हैं।

द्विंतीया पाट (फा. कृ. २)से स्नानयात्रा तक शृंगारमें बिलावल रागमें पदगान होता है। स्नानयात्रासे ठकुरानी तीजतक बिलावल राग गाया नहीं जाता है। स्नान यात्रासे रथयात्रा तक शृंगार, ग्वाल, पलना, इत्यादिमें सुवा (सुहा) रागमें पदगान होता है।

राजभोग आने पर छाकके पद सारंग रागमें, गाये जाते हैं। राजभोग दर्शन पनघट, एवं कुंजभावके एवं उसदिनके शृंगार भावके एवं फुल मंडलीके पद सामंत सारंग, सारंग में गाये जाते हैं। इनदिनों रागमाला एवं सुधराई रागभी विशेषमें गाया जाता है। अक्षयतृतीयासे रथयात्रा तक खसखाना, चन्दन इत्यादिके पद

उपरोक्त रागमें ही गाये जाते हैं।

भोग दर्शन- अक्ष्यतृतीया से स्नानयात्रा तक सारंग रागमें, संध्यार्तिमें हमीर इत्यादि रागमें गाया जाता है।

स्नानयात्रासे रथयात्रा तक भोग संध्यार्तिमें सोरठ रागमें पदगान होता हैं।

शयनमें कुंजभावके पद द्वितीयापाटसे गाये जाते हैं। अक्षयतृतीयासे स्नानयात्रा तक चंदन के पद, फुलके शृंगार हो तब फूलके शृंगारके पद और बधाई हो तब बधाई गाई जाती है।

वर्षाऋतु

रथयात्रासे बर्षाऋतु शुरू होती है। उस दिनसे मल्हार राग शुरु होता है। ठकुरानी तीज तक सभी समयके सभी पदगान मल्हार रागमें ही होते है। मल्हार रागके विविध प्रकार गाये जाते हैं।

ठकुरानी तीजसे सभी राग गाये जाते हैं।

हिंडोलाके दिनोमें सायं सभी राग गाये जाते हैं। श्रावण शु. ११से विशेषकर मल्हार राग बंध होता है लेकिन हिंडोरा झूलते समय गाया जाता है।

शरदऋतुमें मालव इत्यादि रागभी गाया जाता है। सभी ऋतुओमें तत् तत् ऋतुके विशेष रागकी आलापचारी प्रथम गाई जाती है बादमें उस रागका पदगान होता है। इतना याद रहेकि बधाईके पदोंमें रागोंका बन्धन नहीं है। यहाँ जो रागोंका क्रम दिया गया है वो सामान्य रूपसे सर्वत्र प्रचलित है। इसके अतिरिक्त जिसके घरकी जैसी रीत उसके अनुसार तत् तत् समयमें तत् तत् राग, समय एवं ऋतु अनुसार गाये जाते हैं।

कीर्तन प्रबोधमें हमने कुछ अलंकारोंका अभ्यास किया था इस पुस्तकमें हम कुछ और अलंकारोंका अभ्यास करेंगे जिससे स्वरोंका अभ्यास सुगम और मधुर बनेगा।

१) सारे, रेग, गम, मप, पध, धनी, नीसां
सांनी, नीध, धप, पम, मग, गरे, रेसा

२) सारेसा, रेगरे, गमग, मपम, पधप, धनीध, नीसांनी, सारेंसां
सांनीसां, नीधनी, धपध, पमप; मगम, गरेग, रेसारे, सानी̣सा

३) सासा रेरे सासा, रेरे गग रेरे, गग मम गग, मम पप मम, पप धध पप,
धध नीनी धध, नीनी सांसां नीनी, सांसां रेंरें सांसां.
सांसां नीनी सांसां, नीनी धध नीनी, धध पप धध, पप मम पप,
मम गग मम, गग रेरे गग, रेरे सासा रेरे, सासा नीनी सासा

४) सासा गग, रेरे मम, गग पप, मम धध, पप नीनी, धध सां सां
सांसां धध, नीनी पप, धध मम, पप गग, मम रेरे, गग सासा.

५) सासा मम, रेरे पप, गग धध, मम नीनी, पप सांसां, सांसां पप,
नीनी मम, धध गग, पप रेरे, मम सासा.

ताल विभाग

संगीत-रथ के दो पहिये माने जाते हैं। एक है स्वर और दूसरा है ताल। बिना स्वर और ताल संगीत अधूरा रहता है। जितनी आवश्यकता भाषामें व्याकरणकी है, उतनी ही संगीतमें तालकी। तालके सम, खाली, आवर्तन, ताली, बोल, आदिका परिचय गुरूजीने हमें पिछली पुस्तकमें कराया था। इस पुस्तकमें हम ताल, मात्रा और लयके प्रकार सीखेंगे।

ताल :-

भरतमुनीके अनुसार संगीतमें काल नापनेके साधनको ताल कहते हैं। तालसे गायन, वादन और नर्तन सुव्यवस्थित बनतें हैं और ताल बद्ध संगीत ही सर्वदा विशेष आनंददायक होता है।

मात्रा :-

मात्रा तालका ही एक हिस्सा है। विभिन्न मात्राओंके एक समूहको ताल कहते हैं। भिन्न-भिन्न मात्राओंके प्रमाणसे ताल पहचाना जाता है। मात्राको लय नापनेका मापदंड कहा जाता हैं। जब हम समान लयमें हाथसे ताली देते हैं, तब एकके बाद दूसरी तालीके समयको मात्रा कहा जाता है। यदि घड़ीकी एक सैकिंडको हम एक मात्रा मानें तो १६ सैकिंडमें तीनताल बन जायेगी, १२ सैकिंडमें चौताल बनेगी, १० सैकिंडमें झपताल बनेगी और १४ सैकिंडमें धमारताल बनेगी। इसी प्रकार बहुतसी तालें बनी हैं।

ऐसा कहा जाता है कि चील पक्षी एक मात्रा, कौआ दो मात्रा, मोर तीनमात्रा और नेवला आधी मात्रा की आवाज़ निकालते हैं।

लय :-

किसीभी प्रकारकी गतिको लय कहते हैं। संगीतमें समयकी समान गति को लय कहते हैं। जब कोईभी ताल एकही चालमें बजाया जाता है तब उससे एक प्रकारकी लय स्थिर हो जायेगी। इसी तालकी गतिको जब घटाई बढाई जायेगी तब उस तालकी लयभी बदल जायेगी। इस प्रकार मुख्य तीन लय मानी गयी हैं। १) मध्यम लय २) विलंबित लय ३) द्रुत लय।

मध्य लय :-

मध्यका अर्थ होता है बीचका। जो लय बहुत धीमीभी न हो और बहुत तेज भी न हो उसे मध्यलय कहते हैं। संगीतकी भाषामें जो विलंबित से तेज और द्रुत लय से कम हो उसे मध्य लय कहते हैं।

उदाहरणतया एक मिनटमें एकसी चालसे हमने ६० तक की गिनती गिनी जिसे हम मध्य लय मानेंगे। इसके पश्चात एक ही मिनटमें समान चालसे हमने तीस तक गिनती की तो वह ‘‘विलांबित लय’’ बनेगी। इसी तरह एक मिनटमें १२० तक गिनती करेंगे तो गिनतीकी चाल तेज हो जायेगी। इसे ही ‘‘द्रुत लय’’ कहते हैं।

विलंबित लय :-

विलंबित अर्थात जिसकी चाल बहुत धीमी हो। व्यवहारमें मध्यलयसे जिसकी लय आधी हो उसे विलंबित लय कहा जाता है।

द्रुत लय :-

द्रुतका अर्थ है ‘‘तेज’’ जिस लयकी चाल विलंबित लय से चौगुनि और मध्यम लय से दुगुनि है उसे द्रुत लय कहते हैं। जब कोई संगीतज्ञ अपनी कलाका प्रदर्शन करना चाहता है तब इन तीन लयोंके अतिरिक्त और भी लयोंका प्रयोग करता है। इस प्रकार लयके दस भेद माने गये हैं। जैसे- विलंबित लय, दुगुन लय, चौगुन लय, आड़ी लय, तिगुन लय, इत्यादि।

अब हम कुछ नये ताल सीखेंगे।

ताल : धमार **मात्रा : १४** **खंड : ४**

ताली : १,६,११ **खाली : ८**

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क	धि	ट	धि	ट	धा	-	ग	ति	ट	ति	ट	ता	-
X					२		०			३			

१	२	३	४	५	६	७
क धिट	धिट	धा-	ग	तिट	तिट	ता
X	२		०		३	

द्रुत लय में धमार सात मात्रामें इस प्रकार बजाई जाती है ।

ताल : दीपचंदी मात्रा : १४ खंड : ४

ताली : १,४,११ खाली : ८

यह ताल अधिकतर तबले पर बजाया जाता है।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
धा	धीं	-	धा	धा	धीं	-	ता	तिं	-	धा	धा	धिं	-
X			२				०			३			

वाद्य परिचय

तानपूरा

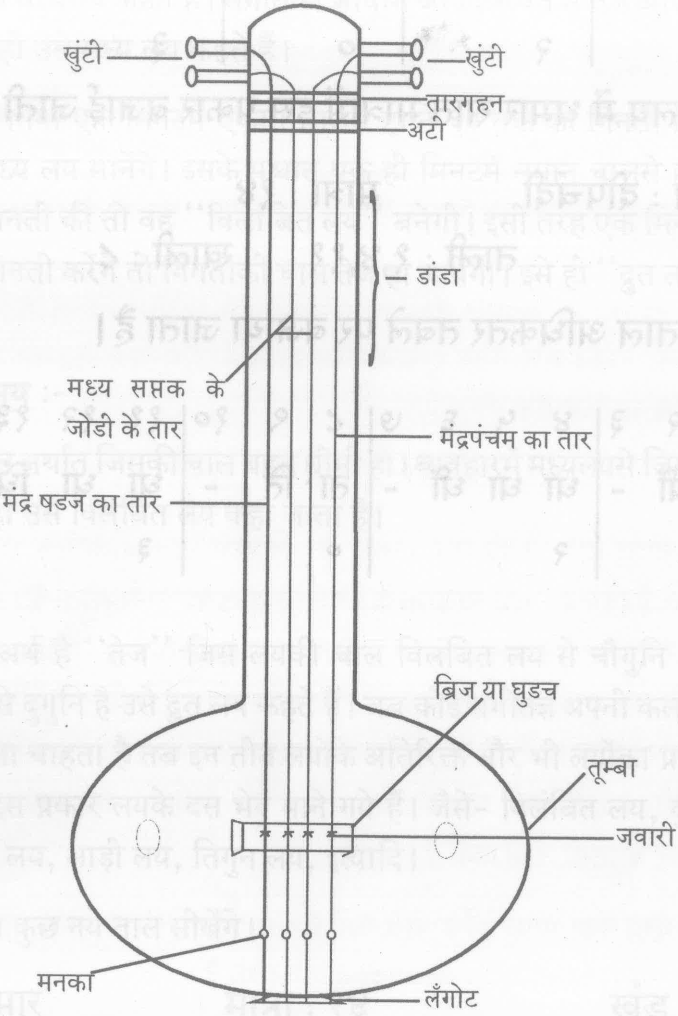
खुंटी
खुंटी
तारगहन
अटी
डांडा
मध्य सप्तक के जोडी के तार
मंद्रपंचम का तार
मंद्र षडज का तार
ब्रिज या घुडच
तूम्बा
जवारी
मनका
लँगोट

यह एक अति प्राचीन, संगीतमें स्वरसंगत करनेवाला वाद्य है। इसे घोषवीणा भी कहा गया है। यह चार तारोंकी वीणा है। गायकके लिए तानपूरा अत्यंत महत्वपूर्ण तंतुवाद्य है। गायक अपने गले के धर्मानुसार इसमें अपना स्वर कायम कर लेता है और इसकी झंकारके सहारे उनका गायन चलता रहता है। गायन या वादनमें स्वर देनेके लिए तानपूरा छेडा जाता है।

यह वाद्य लकडी और कद्दूका बना होता है।

तूम्बा : यह मोटे कद्दूका पोला होता है जिसके कारण स्वर गूंजते हैं। आगेके भागको काट कर उपरसे लकडीकी ''तबली'' से ढक दिया जाता है।

डांड : तूम्बेके उपर लकडीका पोला डांड या डांडा होता है।

लँगोट : तूम्बेके नीचेके भागमें लकडीकी पट्टी या कीलको लँगोट कहा जाता है। इससे तानपूरेके चारों तार आरंभ हो कर खूंटीयों तक जाते हैं।

खूंटीयां : डांडके उपरी भागमें चार खूंटीयां होती हैं। दो आगे और एक एक दोनों बगलोमें। तार इन चार खूंटियों पर खींचे रहते है।

अटी : खूंटियोंके नीचे दो हाथीदांतकी या हिरनके सींगकी पट्टीयां होती हैं। एक पट्टी (तारगहन)में छेद कर तार पिरोए जाते हैं। उसीके नीचेकी दूसरी पट्टी या अटी पर तार रखे जाते हैं।

ब्रिज या घुडच : यह तबलीके उपर बीचमें रखा जाता है। इसके उपर तानपूरे के चारों तार स्थिर रहते हैं।

मनका : ब्रिज और लँगोट के बीचमें जिन मोतीयोंमें तार पिरोए होते हैं उसे मनका कहते हैं। इससे स्वर मिलानेमें सहायता मिलती है।

जवारी : ब्रिज और तारोंके बीच धागे (डोरा) का टुकडा निश्चित स्थान पर दबाया जाता है, जिससे तारों में सुंदर झंकार पैदा होती है।

तार : चार तार होते हैं। पहला तार मंद्र सप्तकके पंचम (प़) में मिलाया जाता हैं। जिन रागोंमें पंचम स्वर वर्जित होता है ऐसे रागोंमें इसी तारको मंद्र सप्तकके मध्यममें मिलाते हैं। दूसरे दो तार मध्य सप्तकके षडज (सा) में मिलाये जाते हैं। चौथा तार जो पीतलका होता है उसे मंद्र सप्तकके षडजमें मिलाया जाता है।

पहले तारको सीधे हाथकी मध्यमा (दूसरी) अँगुली से और शेष तीनों तारोंको तर्जनी (पहली) अँगुलीसे छेडा जाता है। इन चारों तारोंकी झंकार गायकको उसके स्वरका बोध कराते हैं और गायनमें तन्मयता दिलाते हैं।

राग : ललित

दोऊ मध्यम, कोमल ऋषभ, पंचम वर्जित जान ।
म - स वादी संवादीसों, ललित राग पहचान ॥

प्रातः कालीन रागोमें ललितका स्थान बहुतही महत्त्वपूर्ण है। यह राग अतिमधुर है और अष्टसखादि महानुभावोंने इस रागमें खंडिता - नायिका श्रृंगार रसानुकूल भाववर्णन किया है।

यह राग मारवा थाट से उत्पन्न होता है। इस रागमें "पंचम" स्वर वर्जित होने के कारण यह राग षाड़व - षाड़व जातिका है। इस रागका वादी स्वर "मध्यम" और संवादी स्वर "षड़ज" है। इस रागमें दोनों "मध्यम" का प्रयोग बहुतही सुन्दरता के साथ होता है। जैसे "धम॑, मग" ऩीरे॒ गम, म॑ म ग " इन स्वरोंसे यह राग तुरंतही पहचाना जाता है । ये दोनों स्वरसमूह रागकी विशेषता व्यक्त करते हैं। "ध म॑ म ग" स्वरोंपर मींड लेनेसे राग की सुन्दरता औरभी बढ़ती है। शास्त्रीय संगीत गायक "कोमल ऋषभ" और "कोमल धैवत" का प्रयोग करते हैं।

राग ललितका गायन समय रात्रिका अन्तिम प्रहर है। ललित राग उष्णप्रकृतिका होने से पुष्टिमार्गीय सेवा प्रणालिमें विशेषतः शीतकालमें मार्गशीर्ष अमावस्या से महा शुक्ल चतुर्थी तक मंगला और श्रृंगारके समय गाया जाता है। इस रागमें खंडिताके पद विशेषतया गाये जाते हैं।

आरोह : **ऩी रे॒ ग म, म॑मग, म॑धसां**

अवरोह : **नी रें॒ नी ध, म॑ध, म॑मग, म॑ ग रे॒ सा**

पकड़ : **ऩी रे॒ ग म, घम॑मग, म॑ ग रे॒ सा**

स्वर विस्तार :

१) सा, ऩी रे॒ गम, ध म॑ म ग, म॑ ग रे॒ सा ।
२) म॑ ध, म॑मग, म॑ग, रे॒सा ।
३) म॑ ध सां, रें॒ नी ध, म॑ध, म॑मग, म॑ ग रे॒ सा ।
४) म॑धसां, नि रें॒ गं मं, मं॑ मं गं, मं॑ गं रें॒ सां, रें॒ नी ध, म॑ म ग, म॑ ग रे॒ सा ।

कीर्तन - १ शीतकाल खंडिताका पद (शुद्धधैवतका ललित)

कमलसी अखियाँ लाल तिहारी ॥
तिनसों तकतक तीर चलावत वेधत छतियां हमारी ॥१॥
इन्हें कहा कोउ दोष लगावत ये अजहूंन संभारी ॥
श्री विठ्ठलगिरिधारी कृपानिधि सुरतहीं ते सुखकारी ॥२॥

राग : ललित ताल : त्रिताल मात्रा : १६

मुखडा

३				X				२				०			
नी़	रे॒	ग	म	ध	म॑	म	म	ग	रे॒	ग	म॑	ग	रे॒	सा	सा
क	म	ल	सी	अ	खि	याँ	-	ला	-	ल	ति	हा	-	री	-

अन्तरा

X				२				०				३			
ध	ध	म॑	ध	सां	सां	सां	सां	नी	रें॒	नी	ध	नी	ध	म॑	म
ति	न	सों	-	त	क	त	क	ती	-	र	च	ला	-	व	त
सां	सां	सां	सां	नी	रें॒	नी	ध	म॑	ध	म॑	म	नी़	रे॒	ग	म
वे	-	ध	त	छ	ति	यां	ह	मा	-	री	-	क	म	ल	सी

स्थायी

X				२				०				३			
नी़	रे॒	ग	ग	म	म	म	म	ग	रे॒	ग	म॑	ग	रे॒	सा	सा
ई	न्हें	-	क	हा	-	को	उ	दो	-	ष	ल	गा	-	व	त
नी़	रे॒	ग	ग	म	म	ग	म	ध	म॑	म	म	-	-	-	-
ये	-	अ	ज	हू	-	न	सं	भा	-	री	-	-	-	-	-

अन्तरा

X				२				०				३			
ध	ध	म॑	ध	सां	सां	सां	सां	नी	रें॒	ग	रें॒	ग	रें॒	सां	सां
श्री	-	वि	ट्ठ	ल	-	गि	रि	धा	-	रि	कृ	पा	-	नि	धि
सां	सां	सां	सां	नी	रें॒	नी	ध	म॑	ध	म॑	म	नी̣	रे॒	ग	म
सु	र	त	ही	ते	-	सु	ख	का	-	री	-	क	म	ल	सी

कीर्तन - २ श्री गुसांईजीकी बधाई

भयो श्री गोकुल जयजयकार ॥
भक्ति सुधा प्रगटे श्री विठ्ठल कलियुग जीव निस्तार ॥१॥
महाघोर काटेया कलिके प्रकट कृष्ण अवतार ॥
विष्णुदास प्रभु पर न्योछावर तन मन धन बलिहार ॥२॥

राग : कोमल धैवतका ललित ताल : तेवरा मात्रा : ७

मुखडा

०			२		३		०			२		३	
सां	सां	सां	नी	रें॒	नी	ध॒	म॑ध	म॑	म	नी̣	रे॒	ग	म
गो	कु	ल	जै	-	जै	-	का-	-	र	भ	यो	श्री	-
धम॑	म	म	ग	रे॒	ग	म॑	ग	रे॒	सा	नी̣	रे॒	ग	म
गो-	कु	ल	जै	-	जै	-	का	-	र	भ	यो	श्री	-

अन्तरा

०			२		३		०			२		३	
ध॒	म॑	ध॒	सां	सां	सां	सां	नीरें॒	गं	गं	मं॑	गं	रें॒	सां
भ	क्ति	सु	धा	-	प्र	ग	टे-	श्री	-	वि	-	ठ्ठ	ल
सांसां	सां	सां	नी	रें॒	नी	ध॒	म॑ध॒	म॑	म	ऩी	रे॒	ग	म
कलि	यु	ग	जी	-	व	नि	स्ता-	-	र	भ	यो	श्री	-

स्थायी

०			२		३		०			२		३	
ऩीरे॒	ग	ग	म	म	म	म	गरे॒	ग	म॑	ग	रे॒	सा	सा
म-	हा	-	घो	र	का	-	टे-	या	-	क	लि	के	-
ऩीरे॒	ग	ग	म	म	ग	म	ध॒	म॑	म	-	-	-	-
प्र-	क	ट	कृ	ष्ण	अ	व	ता	-	र	-	-	-	-

अन्तरा

०			२		३		०			२		३	
ध॒	म॑	ध॒	सां	सां	सां	सां	नीरें॒	गं	गं	मं॑	गं	रें॒	सां
वि	ष्णु	-	दा	स	प्र	भु	पर	न्यो	-	छा	-	व	र
सांसां	सां	सां	नी	रें॒	नी	ध॒	म॑ध॒	म॑	म	ऩी	रे॒	ग	म
तन	म	न	ध	न	ब	लि	हा-	-	र	भ	यो	श्री	-

राग : नट

> ''शुद्ध बिलावल मेलमें, ग वर्जित अवरोही ।
> म-स वादी संवादी सों, नट गावत सबकोही ।।''

राग नट प्राचीन राग है और पुष्टिसम्प्रदायके मुख्य रागोंमें माना जाता है। शास्त्रीय ग्रंथोमें राग नटको कहीं-कहीं नाट भी कहा गया है। किंतु कीर्तन संग्रहोंमें एवं परंपरामें ''नट'' का ही व्यवहार है। इसके अलावा ''नट नारायण'' और ''छायानट'' रागभी प्रचारमें है। इन रागोंकी भिन्नता इनके वादी, संवादी, थाट एवं चलनसे स्पष्ट होती है।

राग नट बिलावल थाटका राग है। इस रागका वादी स्वर ''मध्यम'' और संवादी स्वर ''षड़ज'' है। इस रागमें ''कोमल निषाद'' का भी प्रयोग होता है। इस रागकी जाति सम्पूर्ण - षाड़व है क्योकि इसके आरोहमें सातों स्वरोंका प्रयोग होता है और अवरोहमें गांधार स्वर वार्जित है। इस रागमें ''नी ध प, मप, रेग, गम'' राग - वाचक स्वर हैं। इस रागमें ''गंधार'' के साथ ''मध्यम'' स्वर विशेषता लिये हुए है ऐसा रसिकोंका मत है। अर्वाचीन गायकोंने अपने स्वतंत्र गायन-वादनमें ''नट-भैरव'', ''नट-मल्हार'', ''नट-बिलावल'' आदि मिश्र रागोंका प्रचलन बढ़ाया है।

शास्त्रीय संगीतमें राग नटका गायन समय रात्रीका दूसरा प्रहर है। पुष्टिमार्गीय सेवा प्रणालिमें सांयकालीन सेवामें आवनी तथा भोग संध्यामें यह राग अधिकतर गाया जाता है।

आरोह : **सा रे ग म, प ध नी सां**

अवरोह : **सां नी ध प, म प, रे ग म प, ग म रे सा**

पकड़ : **नी ध प म प रे, ग म प, ग म रे सा**

स्वर विस्तार :

१) सा, ग, म, प ग म, रे ग म प, म ग, म रे, सा।

२) नी ध प, रे ग म प, गम, रेसा।

३) प प, सां - - -, धनी सां रें, नी सां ध प, गंमंरेंसां।

४) नि सां ध प, रे ग म प, गम, रे सा

नातर लीला होती जूनी ॥
जों पै श्रीवल्लभ प्रगट न होते, वसुधा रहती सूनी ॥१॥
दिन प्रति नई नई छबि राजत ज्यों कंचन नग चूनी ॥
सगुनदास यह घरको सेवक यश गावत जाको मुनी ॥२॥

राग : नट ताल : झपताल मात्रा : १०

मुखडा

०		३			X		२		
नी॒	ध	प	प	म॑	प	प	प	प	प
ना	-	त	-	र	ली	-	ला	-	-
रे	ग	म	म	प	ग	म	रे	रे	सा
हो	-	ती	-	-	जू	-	नी	-	-

अन्तरा

X		२			०		३		
प	प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां
जो	-	पे	-	श्री	व	-	ल्ल	-	भ
ध	नी	सां	सां	रें	नी	सां	ध	ध	प
प्र	ग	ट	-	न	हो	-	ते	-	-
गं	गं	गं	गं	मं	रें	रें	सां	सां	सां
व	सु	धा	-	-	र	ह	ती	-	-
नी	सां	ध	ध	प	नी॒	ध	प	प	म॑
सू	-	नी	-	-	ना	-	त	-	र

स्थायी

X		२			०		३		
सा	सा	म	म	ग	प	प	प	प	प
दि	न	प्र	-	ति	न	-	ई	-	-
ध	नी	सां	सां	रें	नी	सां	ध	ध	प
न	ई	छ	-	बि	रा	-	ज	-	त
म	म	म	म	ग	प	प	सं	सं	रें
ज्यों	-	कं	-	-	च	न	न	-	ग
नि	सं	ध	ध	प	नी	ध	प	प	म॑
चू	-	नी	-	-	ना	-	त	-	र

अन्तरा

X		२			०		३		
प	प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां
स	गु	ण	-	-	दा	स	य	-	ह
ध	नी	सां	सां	रें	नि	सां	ध	ध	प
घ	र	को	-	-	से	-	व	-	क
गं	गं	गं	गं	मं	रें	रें	सां	सां	सां
य	श	गा	-	-	व	त	जा	-	को
नी	सां	ध	ध	प	नी	ध	प	प	म॑
मु	-	नी	-	-	ना	-	त	-	र

प्रीतम प्रीत ही ते पैये ।।
यद्यपि रूप गुण शील सुघरता ईन बातन न रिझैये ।।१।।
सतकुल जन्म करम शुभ लक्षण वेद पुराण पढैये ।।
गोविन्द प्रभु बिना स्नेह सुआलों रसना कहा जु नचैये ।।२।।

राग : नट ताल : आडाचौताल मात्रा : ७

मुखडा

३		४		X	२		३		४		X	२	
नी	ध	प	मं	प	प	प	रे	ग	म	प	गम	रे	सा
प्री	-	त	म	प्री	-	त	ही	-	ते	-	पै-	-	ये

अन्तरा

X	२		३		४		X	२		३		४	
प	प	प	सां	सां	सां	सां	धनी	सां	रें	नी	सां	ध	प
य	द्य	पि	रू	प	गु	ण	शी-	ल	सु	घ	र	ता	-
मम	म	ग	प	प	सां	रें	नीसां	ध	प	नी	ध	प	मं
ईन	बा	-	त	न	न	रि	झै-	-	ये	प्री	-	त	म

स्थायी

सासा	म	ग	प	प	प	प	धनी	सां	रें	नी	सां	ध	प
सत	कु	ल	ज	-	न्म	क	रम	शु	भ	ल	-	क्ष	ण
मम	म	ग	प	प	सां	रें	निसं	ध	प	नी	ध	प	मं
वे-	द	पु	रा	-	न	प	ढै-	-	यै	प्री	-	त	म

अन्तरा

X	२		३		४		X	२		३		४	
प	प	प	सां	सां	सां	सां	धनी	सां	रें	नी	सां	ध	प
गो	वि	न्द	प्र	भु	बि	ना	स्ने-	ह	सु	आ	-	लों	-
गंगं	गं	मं	रें	रें	सां	सां	नीसां	ध	प	नी	ध	प	म॑
रस	ना	क	हा	-	जु	न	चै-	-	ये	प्री	-	त	म

राग : अड़ाना

"कोमल ग-ध दोऊ नी लगे, सं-प संवाद बताहि ।
चढत ग उतरत ध-बरजि, राग अड़ाना माहि ॥"

राग अड़ानाके दो प्रकार प्रचलित है, काफी थाटका अड़ाना प्राचीन राग माना गया है और अष्टछाप परम्परामें काफी थाटके राग अड़ाना का समर्थन पंडित आदितरामजीने किया है। कुछ विद्वान इसे रातका सारंग भी कहतें हैं। पं. भातखंडेजी आसावरी थाटके अड़ानेका समर्थन करते हैं।

यह राग उत्तरांगप्रधान है। इस रागका वादी स्वर "तार सप्तकका षड़ज" और संवादी स्वर "पंचम" है। इस रागमें "गंधार" और "धैवत" कोमल हैं और दोनो "निषाद" का प्रयोग होता है। इस रागकी जाति षाड़व है।

इस रागका गायन समय रात्रिका तीसरा प्रहर माना जाता है, कुछ गुणीजन दूसरा प्रहर भी मानते हैं। पुष्टिभक्तिमार्गकी सेवा प्रणालिमें शयन समयमें यह राग गाया जाता है। बधाईके कई पद ईस रागमें गाये जाते हैं।

आरोह : **सा रे, म प, ध, नी सां**

अवरोह : **सां ध, नी प, मप, ग म रे सा**

पकड़ : **सां, धनीसां, धनीप, म प, ग म रे सा**

स्वर विस्तार :

१) सा रे म प, ग म रे सा
२) म प ध, नी प, म प ध नी सां
३) नी सां रें सां, गं मं रें सां
४) नी सां रें सां, ध नी प, म प, ग म रे सा

तेरी भ्रोंहकी मरोरनतें ललित त्रिभंगी भये
अंजनदे चितयो, भयेजु श्याम वाम॥
तेरी मुसकान देख दमिनीसी कोंधजात
दीनव्है याचत प्यारी लेत राधे आधोनाम ॥१॥
ज्यों ज्यों नचायो चाहो तैसेहरि नाचत बल
अबतो मया कीजे चलिये निकुंजधाम॥
नंददासप्रभु तुम बोलोतो बुलायलाऊं उनकोंतो
कल्पबीतें तेरी घरीयाम॥२॥

राग : अड़ाना ताल : ध्रुपद मात्रा : १२

स्थायी

X		०		२		०		३		४	
सां	सां	नीं	सां	सां	रें	नी	सां	ध	नी	प	प
भ्रों	-	ह	की	-	म	रो	-	र	न	ते	-
म	म	म	प	नी	प	ग	ग	म	रे	रे	सा
ल	लि	-	त	-	त्रि	भं	-	गी	भ	ये	-
सा	रे	म	म	प	प	ध	ध	नी	प	म	प
अं	-	ज	न	दे	-	चि	-	त	यो	-	भ
प	रें	रें	रें	सां	रें	नि	सां	प	नी	म	प
ये	-	जु	श्या	-	म	वा	-	म	ते	-	री

अन्तरा

म	म	प	नी	ध	नी	सां	सां	नी	सां	सां	सां
ते	-	री	मु	-	स	का	-	न	दे	-	ख

नी	नी	सां	रें	सां	सां	ध̲	ध̲	नी̲	प	प	प
दा	-	मि	नी	-	सी	कों	-	ध	जा	-	त
म	म	प	नी	सां	रें	ग̲ं	ग̲ं	मं	रें	सां	सां
दी	-	न	व्हे	-	या	च	-	त	प्या	-	री
नी	नी	सां	रें	सां	सां	ध̲	ध̲	नी̲	प	म	प
ले	-	त	रा	-	धे	आ	-	धो	ना	-	म

संचारी

सा	सा	रे	म	प	प	ध̲	ध̲	नी̲	प	प	प
ज्यों	-	-	ज्यों	-	न	चा	-	यो	चा	-	हो
म	म	म	प	नी̲	प	ग̲	ग̲	म	रे	सा	सा
तै	-	से	ह	-	रि	नी	च	त	ब	-	ल
सा	सा	रे	म	प	प	ध̲	ध̲	नी̲	प	म	प
अ	-	ब	तो	-	म	या	-	-	की	-	जे
प	रें	रें	रें	सां	रें	नी	सां	प	नी̲	म	प
च	-	ली	ये	-	नि	कुं	-	ज	धा	-	म

आभोग

म	म	प	नी̲	ध̲	नी	सां	सां	नी	सां	सां	सां
नं	-	द	दा	-	स	प्र	-	भु	तु	-	म
नी	नी	सां	रें	सां	सां	ध̲	ध̲	नी̲	प	प	प
बो	-	लो	तो	-	बु	ला	-	य	ला	-	ऊं
म	म	प	नी	सां	सां	ग̲ं	ग̲ं	मं	रें	सां	सां
उ	-	न	को	-	तो	क	-	ल्प	बी	-	ते

नी	नी	सां	रें	सां	सां	ध	ध	नी	प	म	प
ते	-	री	घ	-	री	या	-	म	ते	-	री
X		०		२		०		३		४	

कीर्तन - २ **श्री महाप्रभुजीकी बधाई**

आज बधाई मंगलचार ॥
गावत मंगल गीत युवतीजन नवसत साज सिंगार ॥१॥
मंगल कनक कलश शुभ मंगल बांधी बंदनबार ॥
मंगल मोतिनचोक पुराये पंचशब्द गृह द्वार ॥२॥
घर घर मंगल महामहोत्सव श्री वल्लभ अवतार ॥
हरजीवन प्रभु यज्ञपुरूष श्री लक्ष्मण भूप कुमार ॥३॥

राग : अड़ानो ताल : धमार मात्रा : १४

प नी म प **मुखडा**

आ - ज ब

X					२		०			३			
सां	सां	सां	नी	सां	रें	सां	ध	नी	प	प	नी	म	प
धा	-	ई	मं	-	ग	ल	चा	-	र	आ	-	ज	ब

अन्तरा

मप	नीध	नी	सां	नी	सां	सां	नीसां	रें	सां	ध	नी	प	प
गा-	व-	त	मं	-	ग	ल	गी-	त	यु	व	ती	ज	न
मप	नी	सां	गं	मं	रें	सां	नीसां	नी	प	प	नी	म	प
नव	स	त	सा	-	ज	सिं	गा-	-	र	आ	-	ज	ब

स्थायी

नीनी	सां	सां	ध	नी	प	प	मम	नी	प	ग	म	रे	सा
मं-	ग	ल	क	न	क	क	लश	शु	भ	मं	-	ग	ल

सारे	म	म	प	प	म	प	धनी	प	प	प	प	प	प
बां-	धी	-	बं	-	द	न	बा-	-	-	-	-	-	र

अन्तरा

X					२		०			३			
मप	नीध	नी	सां	नी	सां	सां	नीसां	रें	सां	ध	नी	प	प
मं-	ग-	ल	मो	-	ति	न	चो-	क	पु	रा	-	ये	-
मप	नी	सां	गं	मं	रें	सां	नीसां	नी	प	प	नी	म	प
पं-	च	श	-	ब्द	गृ	ह	द्वा-	-	र	आ	-	ज	ब

स्थायी

X					२		०			३			
नीनी	सां	सां	ध	नी	प	प	मम	नी	प	ग	म	रे	सा
घर	घ	र	मं	-	ग	ल	म-	हा	म	हो	-	त्स	व
सारे	म	म	प	प	म	प	धनी	प	प	प	प	प	प
श्री-	व	-	ल्ल	भ	अ	व	ता-	-	र	-	-	-	-

अन्तरा

X					२		०			३			
मप	नीध	नी	सां	नी	सां	सां	नीसां	रें	सां	ध	नी	प	प
हर	जी-	-	व	न	प्र	भु	य-	ज्ञ	पु	रू	ष	श्री	-
मप	नी	सां	गं	मं	रें	सां	नीसां	नी	प	प	नी	म	प
ल-	क्ष्म	ण	भू	-	प	कु	मा-	-	र	आ	-	ज	ब

राग : कान्हरा

“काफीके ही थाटमें दोनों निषाद लगाय।
रे-प वादी संवादी कर, तब कान्हरा सुहाय॥”

राग कान्हरा प्राचीन एवं ग्रंथोक्त राग है। राग कान्हराको कई विद्वान कान्हड़ाभी कहते हैं। इस रागके लगभग ३० प्रकार प्रचारमें हैं। किन्तु पुष्टि सम्प्रदायमें केवल कान्हरा राग गानेका अधिक प्रचार है। अन्य कोईभी रागमें इतने प्रकार प्राप्त नहीं है, इसलिए इस राग को रागोंका पति माना जाता हैं।

“रागनको पति कानरो, धरतीको पति इन्द्र,
तारेनको पति चन्द्रमा, गोपी पति गोविन्द”

श्री स्वामिनीजीको यह राग अतिप्रिय है, क्योंकि श्री कृष्णका नाम “कान्हर” या “कान्ह” भी है। इतना ही नहीं, श्री राधाजीके मुखसे यह राग सुनना श्री कृष्णको भी अतिप्रिय है। श्री कृष्णदासजीके पदकी ये पंक्तियाँ हमें इस बातका प्रमाण देती हैं।

“राग कान्हरो तुम्ही पे सुनियत, श्री वृषभाननंदिनी राधे
तान तरंग अनंग गति उपजति, कहा कहो रस सिंधु अगाध॥”

कान्हरा के अनेकविध प्रकारोंमेंसे हमारे सम्प्रदायमें नायकी, अड़ाना, सूहा, सुधराई, काफी, रायसा, बागेश्री, सिन्दूरा, दरबारी, आदि प्रचलित हैं। कान्हरा रागके काफी और आसावरी, दोनों थाट पाये जाते हैं। किन्तु अष्टछाप कीर्तन परम्परामें प्रचलित राग कान्हरा काफी थाटका है। इस रागका वादी स्वर “ऋषभ” और संवादी स्वर “पंचम” है। इस रागकी जाति सम्पूर्ण - सम्पूर्ण है। इस रागके आरोहमें “शुद्ध निषाद” का प्रयोग भी होता है। आरोहमें “गांधार” और अवरोह में “धैवत” स्वर वक्र रहता है। नी प की स्वर संगति और “गांधार” आंदोलित करनेसे रागकी सुन्दरता और बढ़ती है।

पुष्टिभक्ति सम्प्रदायमें इस रागको शयन समयमें अधिक गाया जाता है और प्रत्येक बधाईमें भी इस रागके पद प्राप्त हैं।

आरोह : **सा रे, ग म रे सा, म प, नी ध, नी सां**

अवरोह : **सां, नी ध प ध, नी ध, म प ध, म ग रे स**

पकड़ : **सां, नी ध, म प ध, म ग रे सा**

स्वर विस्तार :

१) सा, रे ग॒ रे सा
२) ग॒ म ध, प ध नी॒, ध म प ध, ग॒ रे सा
३) ग॒ म ध नी सां, नि सां रें सां, गं॒ मं रें सां
४) नी॒ ध, प ध नी॒, ध म प ध, ग॒, रे सा

कीर्तन - १ कुंज शयन दर्शनका पद

बसो मेरे नैनन में दोऊ चंद ।।
गौर वरण वृषभान नंदिनी श्याम वरणनंदनंद ।।१ ।।
कुंज निकुंजमें विहरत दोऊ अति सुख आनंद कंद ।।
रसिक प्रीतम पिया रसमेंमाते परे प्रेमके फंद ।।२ ।।

राग : कान्हरो ताल : त्रिताल मात्रा : १६

स्थायी

X				२				०				३			
सां	सां	सां	सां	नी॒	ध	प	ध	नी॒	नी॒	ध	प	ग॒	ग॒	रे	सा
नै	-	न	न	में	-	दो	उ	चं	-	द	ब	सो	-	मे	रे
रे	म	म	म	प	नी॒	ध	प	ग॒	ग॒	सा	रे	ग॒	म	रे	सा
नै	-	न	न	में	-	दो	उ	चं	-	-	-	द	-	-	-

अन्तरा

नी॒	ध	नी	नी	सां	नी	सां	सां	नी	सां	रें	रें	गं॒	मं	रें	सां
गौ	-	र	व	र	ण	वृ	ष	भा	-	न	नं	-	दि	नी	-
सां	सां	नी॒	ध	प	ध	नी॒	रें	सां	सां	नी॒	प	ग॒	ग॒	रे	सा
श्या	-	म	व	र	ण	नं	द	नं	-	द	ब	सो	-	मे	रे
रे	म	म	म	प	नी॒	ध	प	ग॒	ग॒	सा	रे	ग॒	म	रे	सा
नै	-	न	न	में	-	दो	उ	चं	-	-	-	द	-	-	-

स्थायी

सां	सां	सां	सां	नी	ध	प	ध	नी	नी	ध	प	ग	ग	रे	स
कुं	-	ज	नि	कुं	-	ज	में	वि	ह	र	त	दो	-	ऊ	-
रे	म	म	म	प	नी	ध	प	ग	ग	सा	रे	ग	म	रे	सा
अ	ति	सु	ख	आ	-	नं	द	कं	-	-	-	द	-	-	-

अन्तरा

नी	ध	नी	नी	सां	नी	सां	सां	नी	सां	रें	रें	गं	मं	रें	सां
र	सि	क	प्री	त	म	पि	या	र	स	में	-	मा	-	ते	-
सां	सां	नी	ध	प	ध	नी	रें	सां	सां	नी	प	ग	ग	रे	सा
प	रे	-	प्रे	-	म	के	-	फं	-	द	ब	सो	-	मे	रे
रे	म	म	म	प	नी	ध	प	ग	ग	सा	रे	ग	म	रे	सा
नै	-	न	न	में	-	दो	उ	चं	-	-	-	द	-	-	-

कीर्तन - २ **जन्माष्टमीकी बधाई**

यह धन धर्मही ते पायो ॥
नीके राखि यशोदा मैया नारायण व्रज आयो ॥१॥
जा धन को मुनि जप तप खोजत वेदहू पार न पायो ॥
सो धन धर्यो क्षीर सागरमें ब्रह्मा जाय जगायो ॥२॥
जा धनतें श्री गोकुल सुख लहियत सगरे काज संवारे ॥
सो धन वार वार उर अन्तर परमानन्द विचारे ॥३॥

राग : कान्हरो ताल : धमार मात्रा : १४

स्थायी

X					०		२			३			
सांसां	सां	सां	नीनी	धप	ध	नी	नी	ध	प	ग	ग	रे	सा
ध-	-	र्म	ही-	ते-	-	पा	-	यो	-	य	ह	ध	न
रेम	मम		प	नी	ध	प	गग	रेनी	सारे	ग	म	रे	सा
ध-	-	र्म	ही	-	ते	-	पा-	-	-	यो	-	-	-

अन्तरा

X					०		२			३			
नीध	नी	नी	सां	सां	सां	सां	नीसां	रें	रें	गं	मं	रें	सां
नी-	के	-	रा	-	ख	ज	सो-	दा	-	मै	-	या	-
सांसां	नी	ध	प	ध	नी	रें	सांसां	नी	प	ग	ग	रे	सा
ना-	रा	-	य	ण	व्र	ज	आ-	यो	-	य	ह	ध	न

स्थायी

X					०		२			३			
सांसां	सां	सां	नीनी	धप	ध	नी	नी	ध	प	ग	ग	रे	सा
जा-	ध	न	को-	मु-	नी	ज	प	त	प	खो	-	ज	त
रेम	म	म	प	नी	ध	प	गग	रेनी	सारे	ग	म	रे	सा
वे-	द	हु	पा	-	र	न	पा-	--	--	यो	-	-	-

अन्तरा

X					०		२			३			
नीध	नी	नी	सां	सां	सां	सां	नीसां	रें	रें	गं	मं	रे	सां
सो-	ध	न	ध	यों	-	-	क्षीर	सा	-	ग	र	में	-
सांसां	नी	ध	प	ध	नी	रें	सांसां	नी	प	ग	ग	रे	सा
ब्र-	ह्मा	-	जा	-	य	ज	गा-	-	-	यो	-	-	-

स्थायी

X					०		२			३			
सांसां	सां	सां	नीनी	धप	ध	नी	नी	ध	प	ग	ग	रे	सा
जा-	ध	न	तें-	श्री-	गो	कु	ल	सु	ख	ल	हि	य	त
रेम	म	म	प	नी	ध	प	गग	रेनी	सारे	ग	म	रे	सा
सग	रे	-	का	-	ज	सं	वा-	--	--	रे	-	-	-

अन्तरा

X					०		२			३			
नीध	नी	नी	सां	सां	सां	सां	नीसां	रें	रें	गं	मं	रें	सां
सो-	ध	न	वा	-	र	वा	-र	उ	र	अं	-	त	र
सांसां	नी	ध	प	ध	नी	रें	सांसां	नी	प	ग	ग	रे	सा
पर	मा	-	नं	-	द	वि	चा-	रे	-	य	ह	ध	न

कीर्तन ३ — श्री महाप्रभुजी की वधाई

राग : कान्हरो ताल : धमार

प्रकटे पुष्टि महारस देन ॥
श्री वल्लभ हरि भाव अति
मुखरूप समर्पित लेन ॥ १ ॥
नित्य संबंध कराय भावदे
विरह अलौकिक बेन ॥
यह प्राकट्य रहत हृदयमें
तीनलोक भेदनकों जेन ॥ २ ॥
रहिये ध्यान सदा इनके पद
पातक कोऊ लगेन ॥
रसिक यह निरधार निगमगति
साधन और नहेन ॥ ३ ॥

यह पद उपरकी स्वर लिपी अनुसार केसेटमें गाया गया है ।

राग : नायकी (कान्हरा)

''दोऊ निषाद ले गान कर, कोमल कर गंधार।
कहत नायकी कान्हरा, प-स संवाद संभार॥''

राग नायकी काफी थाटका राग है। प्रचारमें इस रागमें ''धैवत'' स्वर वर्ज्य मानने से जाति ''षाड़व'' होती है किन्तु अष्टछापीय कीर्तन परम्पराके अनुसार इस रागमें सातों स्वरोंका प्रयोग किया गया है, अतः इसकी जाति सम्पूर्ण है। इस रागका वादी स्वर ''पंचम'' और संवादी स्वर ''षड़ज'' है। इस रागमें दोनों निषाद का प्रयोग किया जाता है। ''रे-प'' स्वर संगति रागवाचक है। कोई गुणीजन आरोहमें ''कोमल निषाद'' जैसे ध नी प संगति लेते हैं जिससे रागमें रोचकता आती है। यह राग उत्तरांग प्रधान है।

नायकी रागका गायन समय मध्यरात्री प्रचलित है किन्तु पुष्टिभक्ति सेवा प्रणालिमें संध्याआर्तीके पश्चात शयन, मान और पोढवेके समय इस रागके पद गाये जाते हैं। बधाईके कई पद राग नायकीमें प्राप्त है। जिस प्रकार नायिका सोलह श्रृंगारके बाद सम्पूर्णसुन्दरी बनती है, उसी प्रकार इस रागको सोलह रागों की छायासे श्रृंगारा जा सकता है।

आरोह : **सा, रे ग रे सा, म प ध नी सां**

अवरोह : **सां नी ध, म प ग, म, प ध ग, रे सा**

पकड़ : **रे ग सा रे प, ध म प ध, ग रे सा**

स्वर विस्तार :

१) सा, रे ग रे सा
२) रे ग सा रे प, ध म, प ध ग रे, सा
३) म प ध, सां - - -, ध सां रें, सां रें गं, रें सां
४) रें नी ध प, ध म, प ध सां - - -, नी ध म, प ध ग, रे सा

आनंद बधावनो नंद महरके धाम ॥
बड भागिन जसुमति जायो है कमल नयन घनश्याम ॥१॥
बजत निशान मृदंग ढोल रव मंगल गावत वाम ॥
देत दान कंचन मणि भूषण धेनु बसन लै लै नाम ॥२॥
देत असीस सकल गोपीजन व्रजजन मन अभिराम ॥
हरिनारायण श्यामदासके प्रभु माई प्रकटे हैं पूरण काम ॥३॥

राग : नायकी ताल : आड़ाचौताल मात्रा : १४

स्थायी

३		४		X	२		३		४		X	२	
रे	ग	सा	रे	प	प	प	ध	म	प	ध	मग	रेग	रेसा
आ	नं	द	ब	धा	-	-	-	-	-	व	नो-	--	--
रे	ग	सा	रे	नीध	पध	म	प	ध	सां	रें	नीध	पम	गरे
आ	नं	द	ब	नं-	द-	म	ह	र	के	-	धा-	--	म-
रे	ग	सा	रे	धम	प	ध	सां	सां	सां	सां	पध	सां	रें
आ	नं	द	ब	बड	भा	-	गि	न	ज	सु	मति	जा	-
गं	गं	रें	सां	नीध	पध	म	प	ध	सां	रें	नीध	पम	गरे
यो	-	हैं	-	कम	ल-	न	य	न	घ	न	श्या-	--	म-

स्थायी

X	२		३		४		X	२		३		४	
रेग	सा	रे	प	प	प	प	धम	प	ध	ग	ग	रे	सा
बज	त	नि	शा	-	न	मृ	दं-	-	ग	ढो	ल	र	व

रे	नी	सा	रे	म	प	ध	मग	रेग	रेसा	रे	ग	सा	रे
मं	ग	ल	गा	-	व	त	वा-	--	म-	आ	नं	द	-

अन्तरा

X	२		३		४		X	२		३		४	
धम	प	ध	सां	सां	सां	सां	पध	सां	रें	गं	गं	रें	सां
दे-	त	दा	-	न	कं	-	चन	म	णि	भू	-	ष	ण
नीध	पध	म	प	ध	सां	रें	नीध	पम	गरे	रे	ग	सा	रे
धे-	नु-	व	स	न	लै	लै	ना-	--	म-	आ	नं	द	-

स्थायी

X	२		३		४		X	२		३		४	
रेग	सा	रे	प	प	प	प	धम	प	ध	ग	ग	रे	सा
दे-	त	अ	सी	-	स	स	कल	गो	-	पी	-	ज	न
रे	नी	सा	रे	म	प	ध	मग	रेग	रेस	रे	ग	सा	रे
व्रज	ज	न	म	न	अ	भि	रा-	--	म-	आ	नं	द	-

अन्तरा

X	२		३		४		X	२		३		४	
धम	प	ध	सां	सां	सां	सां	पध	सां	रें	गं	गं	रें	सां
हरि	ना	रा	य	ण	श्या	म	दा-	स	के	प्र	भु	मा	ई
नीध	पध	म	प	ध	सां	रें	नीध	पम	गरे	रे	ग	सा	रे
प्रक	टे-	है	पू	-	र	ण	का-	--	म-	आ	नं	द	-

तेरो मन गिरिधर बिन ना रहेगो ॥
बोलेंगे मोर मुरलीकी धुन सुन जब तोही मदन दहेगो ॥१॥
जानेंगी तब मानेंगी आली प्रेम प्रवाह बहेगो ॥
कुंभनदासप्रभु रसिक मोहन बिन यह रस यों ही बहेगो ॥२॥

राग : नायकी ताल : त्रिताल मात्रा : १६

मुखड़ा

३				X				२				०			
रे	ग̲	सा	रे	नी	ध	प	प	ध	म	प	ध	म	ग̲	रे	सा
ते	रो	म	न	गि	रि	ध	र	बि	न	ना	र	हे	-	गो	-

अन्तरा

X				२				०				३			
ध	म	प	ध	सां	सां	सां	सां	प	ध	सां	रें	ग̲ं	ग̲ं	रें	सां
बो	-	लें	गे	मो	-	र	मु	र	ली	की	-	धु	न	सु	न
नी̲	नी̲	ध	ध	म	म	प	ध	ग̲	ग̲	रे	सा	रे	ग̲	सा	रे
ज	ब	तो	हि	म	द	न	द	हे	-	गो	-	ते	रो	म	न

स्थायी

रे	ग̲	सा	रे	प	प	प	प	ध	म	प	ध	ग̲	ग̲	रे	सा
जा	-	ने	-	गी	-	त	ब	मा	-	नें	गी	आ	-	ली	-
रे	रे	नी̲̣	सा	रे	म	प	ध	ग̲	ग̲	रे	सा	रे	ग̲	स	रे
प्रे	-	म	प्र	वा	-	ह	ब	हे	-	गो	-	-	-	-	-

अन्तरा

X	२	०	३
ध म प ध	सां सां सां सां	प ध सां रें	ग॒ं ग॒ं रें सां
कुं - भ न	दा स प्र भु	र सि क मो	ह न बि न
नी॒ नी॒ ध ध	म म प ध	ग॒ ग॒ रे सा	रे ग॒ सा रे
य ह र स	यों - ही ब	हे - गो -	ते रो म न

राग : काफी

"कोमल ग-नी लगायकर, गावत आधी रात।
प-स वादी-संवादि तें, काफी राग सुहात।।"

राग काफी, काफी थाटसे उत्पन्न होता है। इस रागका वादी स्वर "पंचम" और संवादी स्वर "षड़ज" है। इस रागके आरोह अवरोह, दोनों में सातों स्वर होने से इस रागकी जाति सम्पूर्ण है। काफी रागमें "गंधार" और "निषाद" कोमल है, शेष सभी स्वर शुद्ध हैं। पुष्टिमार्गीय कीर्तनोंमें ग-नि शुद्धका भी प्रयोग होता है। इस रागकी सुन्दरता "सा, ग, प, नी" के उचित प्रयोगसे बढ़ती है।

इस रागका गायन समय मध्यरात्रि प्रचलित है, किन्तु पुष्टिमार्गीय सेवा प्रणालिमें यह राग सर्वकालीन होते हुए भी सायंकालीन सेवामें इस रागके पद गाये जाते हैं। यह राग अधिकतर होरी या फागुनमें गाया जाता हैं । इसके अलावा अन्य बधाई, हिंडोरा और कुछ त्योहारादि के पद प्राप्त हैं। शास्त्रीय गायक इस रागमें द्रुपद, धमार, ठुमरी, दादरा, भजन, टप्पा आदि का गायन करते हैं। इस रागमें गंभीर, चंचल, उल्लास और करूण भावोंका मिश्रण है जिसे कलाकार विभिन्न शैली द्वारा अपनी इच्छानुसार व्यक्त कर सकता है। बहुतसी लोकधुनभी काफी रागमें पायी जाती हैं। कर्णाटक संगीतमें इन्हीं स्वरोंमें गाये जानेवाले रागको "हरप्रिया" कहतें हैं।

आरोह : **सा रे ग, म प, ध नी सां**

अवरोह : **सां नी ध, प म, ग रे सा**

पकड़ : **सासा, रेरे, गग, मम, प**

स्वर विस्तार :

१) सा रे ग रे, ग म प म, प, म प ध नी सां, नी ध, म प ग रे, ग रे सा

२) म प ध, नी सां, रें गं रें सां, नी सां, नी ध प, रे म प ध, म ग रे सा

३) म प ध नी सां, रें गं रें सां, नी सां नी ध प, म प म ग रे, ग रे सा

४) सा सा, रेरे, गग, मम, प

श्रीनाथजीके स्वरूप वर्णनका पद

देख्यो री मैं श्याम स्वरूप ॥
वाम भुजा ऊंची कर गिरिधर, दक्षिण कर कटि धरत अनूप ॥१॥
मुष्टिका बाँध अंगुष्ट दिखावत, सन्मुख दृष्टि सुहाई ॥
चरनकमल युगल सम धर के, कुंज द्वार मन लाई ॥२॥
अति रहस्य निकुंजकी लीला, हृदयमें सुमिरन कीजे ॥
द्वारकेश मन बचन अगोचर, चरनकमल चित दीजे ॥३॥

राग : काफी | ताल : त्रिताल | मात्रा : १६

मुखड़ा

०				३				X				२			
सा	सा	रे	रे	ग॒	ग॒	म	म	प	प	प	ध	म	प	ग॒	रे
दे	-	ख्यो	-	री	-	मैं	-	श्या	-	म	स्व	रू	-	-	प

अन्तरा

०				३				X				२			
म	प	नी	नी	सां	नी	सां	सां	रें	ग॒ं	रें	सां	नी	सां	नी॒ध	मप
वा	-	म	भु	जा	-	ऊं	-	ची	-	क	र	गि	रि	ध-	र-
नी	नी	नी	नी	सां	सां	नी॒	ध	नी॒	नी॒	ध	प	म	प	ग॒	रे
द	-	क्षि	ण	क	र	क	टि	ध	र	त	अ	नू	-	-	प

स्थायी

रे	म	ध	ध	ध	ध	ध	ध	ध	नी॒	ध	प	ध	ध	प	प
मु	-	ष्टि	का	बाँ	-	ध	अं	गु	-	ष्ट	दि	खा	-	व	त
रे	म	ध	प	ग॒	रे	म	म	प	प	प	ध	म	प	ग॒	रे
स	-	न्मु	ख	दृ	-	ष्टि	सु	हा	-	-	-	ई	-	-	-

अन्तरा

०				३				X				२			
म	प	नी	नी	सां	नी	सां	सां	रें	ग	रें	सां	नी	सां	नीध	मप
च	र	न	-	क	म	ल	यु	ग	ल	स	म	ध	र	कें-	--
नी	नी	नी	नी	सां	सां	नी	ध	नी	नी	ध	प	म	प	ग	रे
कुं	-	ज	द्वा	-	र	म	न	ला	-	ई	-	मा	-	ई	-

अन्तरा

०				३				X				२			
रे	म	ध	ध	ध	ध	ध	ध	ध	नी	ध	प	ध	ध	प	प
अ	ति	-	र	ह	-	स्य	नि	कुं	-	ज	की	ली	-	ला	-
रे	म	ध	प	ग	रे	म	म	प	प	प	ध	म	प	ग	रे
हृ	द	य	में	सु	मि	र	न	की	-	-	-	जे	-	-	-

अन्तरा

०				३				X				२			
म	प	नी	नी	सां	नी	सां	सां	रें	ग	रें	सां	नी	सां	नीध	मप
द्वा	-	र	के	-	श	म	न	ब	च	न	अ	गो	-	च-	र-
नी	नी	नी	नी	सां	सां	नी	ध	नी	नी	ध	प	म	प	ग	रे
च	र	न	क	म	ल	चि	त	दी	-	जै	-	मा	-	ई	-

नेह लग्यो मेरो श्यामसुन्दरसों ।।
आयो बसंत सभी बन फुले, खेतन फूली है सरसों ।।
मैं पीरी भई पियके विरहसों, निकसत प्रान अधरसों
कहौं जाय बंसीधरसों ।।१ ।।
फागुनमें सब होरी खेले, अपने अपने बरसों ।।
पियके वियोग जोगन व्है निकसी, धूर उडावत करसों
चली मथुराकी डगरसों ।।२ ।।
ऊधो जाय द्वारिकामें कहियो, इतनी अरज मेरी हरिसों ।।
विरह व्यथासों जीयरा डरत है, जबतें गये हरि घरसों
दरस देखनको तरसों ।।३ ।।
सूरदास मेरी इतनी अरज है, कृपासिंधु गिरिधरसों ।।
गहरी नदिया नाव पुरानी, अबकें उबारो सागरसों
अरज मेरी राधावरसों ।।४ ।।

राग : काफी ताल : दीपचंदी मात्रा : १४

मुखड़ा

०			३				X			२			
सा	रे	रे	ग	ग	म	म	प	प	ध	म	प	ग	रे
ने	ह	ल	ग्यो	-	मे	रो	श्या	म	सुं	द	र	सों	-

अन्तरा

सा	रे	रे	ग	ग	म	म	रें	रें	सां	रें	रें	रें	रें
ने	ह	ल	ग्यो	-	मे	रो	आ	यो	ब	सं	-	त	स
नी	ध	प	ध	सां	रें	गं	सारें	नी	नी	ध	म	प	ध
भी	ब	न	फू	-	ले	-	खे-	त	न	फू	-	ली	है

नी	नी	नी	सां	सां	सां	सां	नी	नी	नी	ध	नी	प	ध
स	र	-	सों	-	-	-	मैं	पी	-	री	-	भ	ई
नीनी	सां	रें	नी	ध	म	प	नीनी	नी	नी	सां	सां	नी	ध
पिय	के	वि	र	ह	सों	-	निक	स	त	प्रा	-	ण	अ
नीनी	ध	प	प	ध	म	म	पध	नी	सां	नी	प	ग	रे
धर	सों	क	हो	-	जा	य	बं-	शी	-	ध	र	सों	- ॥१॥

अन्तरा

सा	रे	रे	ग	ग	म	म	रें	रें	सां	रें	रें	रें	रें
ने	ह	ल	ग्यो	-	मे	रो	फा	गु	न	में	-	स	ब
नी	ध	प	ध	सां	रें	गं	सांरें	नी	नी	ध	म	प	ध
हो	री	-	खे	-	ल	त	अप	ने	-	अ	प	ने	-
नी	नी	नी	सां	सां	सां	सां	नी	नी	नी	ध	नी	प	ध
ब	र	-	सों	-	-	-	पिय	के	वि	यो	-	ग	जो
नीनी	सां	रें	नी	ध	म	प	नीनी	नी	नी	सां	सां	नी	ध
गन	व्हे	-	नि	क	सी	-	धू-	र	उ	डा	-	व	त
नीनी	ध	प	प	ध	म	म	पध	नी	सां	नी	प	ग	रे
कर	सों	च	ली	-	म	थु	रा-	की	ड	ग	र	सों	- ॥२॥

अन्तरा

सा	रे	रे	ग	ग	म	म	रें	रें	सां	रें	रें	रें	रें
ने	ह	ल	ग्यो	-	मे	रो	ऊ	धो	-	जा	-	य	द्वा
नी	ध	प	ध	सां	रें	गं	सांरें	नी	नी	ध	म	प	ध
रि	का	में	क	हि	यों	-	इत	नी	अ	र	ज	मे	री

नी नी नी	सां सां सां सां	नी नी नी	ध नी प ध
ह रि -	सों - - -	विर ह व्य	या - सों -
नीनी सां रें	नी ध म प	नीनी नी नी	सां सां नी ध
जिय रा ड	र त है -	जब ते ग	ये - ह रि
नीनी ध प	प ध म म	पध नी सां	नी प ग रे
घर सों द	र स दे -	खन को -	त र सों - ॥३॥

अन्तरा

सा रे रे	ग ग म म	रें रें सां	रें रें रें रें
ने ह ल	ग्यो - मे रो	सू र दा	- स मे री
नी ध प	ध सां रें गं	सारें नी नी	ध म प ध
इत नी अ	र ज है -	कृ- पा सिं	धु - गि रि
नी नी नी	सां सां सां सां		
ध र -	सों - - -		

यहाँसे कहेरवा प्रारंभ

X	०	X	०
नी नी नी नी	ध नी प ध	नी नी सां रें	नी ध म प
ग ह री -	न दि या -	ना - व पु	रा - नी -
नी नी नी नी	सां सां नी ध	नी नी ध प	प ध म म
अ ब के उ	बा रौ सा -	ग र सों अ	र ज मे री
प ध नी सां	नी प ग रे	स स रे रे	ग ग म म
रा - धा -	ब र सी -	ने - ह ल	ग्यो - मे रो

इस प्रकार सभी तुक में चलती ले सकते हैं ।

राग : जैजैवंती

''तीवर-कोमल रूप दोउ, ग-नि के दिए लगाय।
रि-प वादी-संवादि सों, जैजैवंति कहाय ।।''

राग जैजैवंती एक प्राचीन और लोकप्रिय राग है। कई कलावंत इसे ''जयावंती'' अथवा ''वैजयंती'' राग के नामसे भी पहचानते हैं। यह राग खमाज थाट का है। इस रागके आरोहमें शुद्ध ''गांधार'' और ''निषाद'' तथा अवरोहमें कोमल ''गांधार'' और ''निषाद'' का प्रयोग होता है। कभी कभी अवरोहमें शुद्ध ''गांधार'' का प्रयोग भी किया जाता है। कोमल गांधार लगनेके कारण कुछ विद्वान इस रागको परमेल प्रवेशक राग भी कहते हैं। वास्तवमें ''रे ग॒ रे सा, ऩी सा ध़ ऩि॒ रे, प - रे'' इतने स्वर समुदाय ही जैजैवंतीकी पूर्णता व्यक्त करते हैं।

इस रागमें सोरठ अंगकी छाया है, साथ ही गौड़ और बिलावल, इन दो रागोंका मिश्रण बड़े कौशलसे किया गया है। यह खमाज थाटका राग है लेकिन जैजैवंती के रूपको स्पष्ट करनेके लिये कोमल गांधार को ऋषभ के बीचमें लिया जाता है जैसे रेग॒रेसा । यही स्वर समुदाय जैजैवंती को और रागोंसे अलग करता है। ''रेग॒रेसा, ऩीसाध़ऩि॒रे'' ये स्वर समुदाय रागकी आत्माको प्रकट करता है।

इस रागका वादी स्वर ''ऋषभ'' और संवादी स्वर ''पंचम'' है। इस रागकी जाति सम्पूर्ण सम्पूर्ण है। राग जैजैवंतीका गायन समय रात्रिका दूसरा प्रहर है। अष्टछाप परम्परामें यह राग विशेषत: वर्षा ऋतुमें गाया जाता है। सावनमें हिंडोला के, भादोंमें जन्माष्टमी तथा मुरलीके तथा अश्विनमें रासके कई पद इस रागमें पाये जाते है।

आरोह : **सा, ऩी सा ध़ ऩि॒ रे सा, रे ग॒ रे सा, ग म प, नी सां**

अवरोह : **सां नि॒ धप, धम, रेग॒ रे सा**

पकड़ : **रे ग॒ रे सा, ऩीसाध़ऩि॒रेसा**

स्वर विस्तार :

१) सा, रे ग॒ रे सा, रे ग म प, ध प म ग, रे ग॒ रे सा

२) म प नी सां, नीसांधनी॒रें, रेंग॒रेंसां, रेंगंमंगं, रेंग॒रेंसां, नीसांनी॒धप, ध म ग॒ रे, ग॒ रे सा

३) सा ध़ नी़॒ रे, ग॒ रे सा

कीर्तन - १ **मचकि झुलाको पद**

मचकि मचकि झुले, लचकि लचकि जात
रचकि रची अति सोहे, पटुली पहेरिया ।।
गरज गरज आवे, दामिनी सुहाई लागे
गेहेर गेहेर घटा, आई है गेहेरिया ।।१ ।।
हरख हरख गावै, परस रीझे भीजे
द्वारकेश सोंधेमें हर हर हेरिया ।।
फहेर फहेर करे प्यारेको पिताम्बर
लहेर लहेर करे प्यारीको लहेरिया ।।२ ।।

राग : जैजैवंती **ताल : ध्रुपद** **मात्रा : १२**

स्थायी

X		०		२		०		३		४	
रे	रे	रे	ग	म	प	ग	म	रे	स	नी़	स
म	च	-	कि	-	म	च	-	कि	झु-	-	ले
ध़	ध़	नी़॒	रे	रे	रे	ग॒	रे	सा	रे	सा	सा
ल	च	-	कि	-	ल	च	-	कि	जा	-	त
रे	रे	ग	म	म	ग	प	प	म	ध	प	प
र	च	-	कि	-	र	ची	-	-	अ	-	ति
सां	नी॒	ध	प	म	ग	रे	ग॒	रे	सा	ध़	नी़
प	-	टु	ली	-	प	ह	-	रि	या	-	-

अन्तरा

म	म	प	नी	नी	नी	सां	सां	नी	सां	सां	सां
ग	र	-	ज	-	ग	र	-	ज	आ	-	वे
ध	ध	नी̲	रें	रें	रें	गं̲	रें	सां	रें	सं	सां
दा	-	मि	नी	-	सु	हा	-	ई	ला	-	गे
सां	सां	नी̲	ध	प	प	म	ग	रे	ग̲	रे	सा
गे	हे	-	र	-	गे	हे	-	र	घ	-	टा
रे	रे	ग	म	प	प	ध	म	ग	रेग̲	रे	सा
आ	-	ई	है	-	गे	हे	-	रि	या-	-	-

मचकि

संचारी

रे	रे	रे	ग	म	प	ग	म	रे	रे	स	स
ह	र	-	ख	-	ह	र	-	ख	गा	-	वे
ध़	ध़	नी़̲	रे	रे	रे	ग̲	रे	सा	रे	सा	सा
प	र	-	स	-	-	री	-	झे	भी	-	जे
रे	रे	ग	म	म	ग	प	प	म	ध	प	प
द्वा	-	र	के	-	श	सों	-	-	धे	-	में
सां	नी̲	ध	प	म	ग	रे	ग̲	रे	सा	ध़	नी़̲
ह	-	र	ह	-	र	हे	-	री	या	-	-

आभोग

म	म	प	नी	नी	नी	सां	सां	नी	सां	सां	सां
फ	हे	-	र	-	फ	हे	-	र	क	-	रे
ध	ध	नी	रें	रें	रें	गं	रें	सां	रें	सं	सां
प्या	-	री	को	-	पि	तां	-	-	म्ब	-	र
सां	सां	नी	ध	प	प	म	ग	रे	ग	रे	सा
ल	हे	-	र	-	ले	हे	-	र	क	-	रे
रे	रे	ग	म	प	प	ध	म	ग	रेग	रे	सा
प्या	-	री	को	-	ल	हे	-	रि	या-	-	-

कीर्तन - २ **मुरलीका पद**

माई आज तेरे साँवरेने, बंसरी बजाई है ।।
थकित जमुनाकौ नीर, बछरा न पीवे क्षीर,
धीर धरे मृग मीन, अचल चलाई है ।।१ ।।
थकित उडुगन पति, पवन की मंदगति,
यही गति जादों पति, जैजैवंती गायी हैं ।।
सूरके प्रभुकी बंसी बाजी अति नीकी,
सुनी ताकौ लाग्यो बान, सोई तन जानही ।।२ ।।

राग : जैजैवंती   ताल : झपताल   मात्रा : १०

स्थायी

X		२			०		३		
रे	रे	रे	रे	सा	रे	ग	म	म	प
आ	ज	ते	-	रे	साँ	व	रे	-	ने
ध	प	म	ग	म	रे	ग॒	रेसा	ध़	ऩी॒
बं	स	री	-	ब	जा	ई	है-	मा	ई

अन्तरा

म	प	नी	नी	नी	सां	नी	सां	सां	सां
थ	कि	त	ज	मु	ना	कौ	नी	-	र
ध	ऩी॒	रें	रें	रें	गं॒	रें	नी	सां	सां
ब	छ	रा	-	न	पी	वे	क्षी	-	र
नी	सां	नी॒	ध	म	ग	म	रे	रे	सा
धी	र	ध	-	र	मृ	ग	मी	-	न
रे	ग	म	प	ध	ग	म	रेसा	ध़	ऩी॒
अ	च	ल	-	च	ला	ई	है-	मा	ई

स्थाई

X		२			०		३		
ग	म	ध	ध	ध	नी॒	ध	म	म	म
थ	कि	त	उ	डु	ग	ण	प	-	ति
ग	रे	ग	ग	म	रे	रे	सा	सा	सा
प	व	न	-	की	मं	द	ग	-	ति

नी़	नी़	सा	सा	रे	नी़	ध़	प़	प़	प़
य	ही	ग	-	ति	जा	दौं	प	-	ति
रे	रे	ग	म	प	ग	म	रे	रे	सा
जै	जै	वं	-	ती	गा	यी	है	-	-

अन्तरा

म	प	नी	नी	नी	सां	नी	सां	सां	सां
सू	-	र	-	के	प्र	भु	की	-	-
ध	नी	रें	रें	रें	गं	रें	नी	सां	सां
बं	सी	बा	-	जी	अ	ति	नी	-	की
नी	सां	नी	ध	म	ग	म	रे	रे	सा
सु	नि	ता	-	को	ला	ग्यो	बा	-	न
रे	ग	म	प	ध	ग	म	रेसा	ध़	नी़
सो	ई	त	-	न	जा	न	ही-	मा	ई

राग : केदार

"दो मध्यम केदार में, स-म संवाद सम्हार।
आरोहन रि-ग बरजकर, उतरत अल्प गँधार॥"

प्राचीन समयके अतिप्रसिद्ध रागोंमें दोनों मध्यम वाला लोकप्रिय राग केदार है। इस रागके आरोहमें "तीव्रमध्यम" विशेष रूपसे लिया जाता है जैसे "म॑पधपम" और अवरोहमें कभी-कभी दोनों मध्यमका एक साथ प्रयोग किया जाता है। सुननेमें यह प्रिय भी लगता है। लेकिन अष्टछाप गायन शैलीके प्राचीन कीर्तनकारोंके कीर्तनोंमें "षड़ज" से सीधे "मध्य" पर जाना बड़ा ही सुन्दर प्रतीत होता है। राग केदारमें "गांधार" का प्रयोग महत्त्वपूर्ण है। "गांधार" को गुप्त माना गया है, इसलिए इसका प्रयोग अति अल्प है। इसके अवरोहमें कभी - कभी "धैवत" के साथ "कोमल निषाद" का प्रयोग अल्पमात्रामें विवादी स्वरके नाते किया जाता है। अवरोहमें गांधार स्वर वक्र और दुर्बल रहता है इसलिए इसका प्रयोग सावधानीपूर्वक करना चाहिए अन्यथा कामोदादि रागकी छाया दिखाई देने लगती है।

इस रागका वादी स्वर "षड़ज" और संवादी स्वर "मध्यम" है। इस रागके आरोहमें "ऋषभ" और "गांधार" स्वर वर्जित है। इस रागकी जाति औड़व-सम्पूर्ण है। इस रागका गायन समय रात्रिका प्रथम प्रहर है।

यह राग शीतप्रकृती का होने से उष्णकाल में शयन के समय कुंज के भाव के पदोंमें गाया जाता है। यह राग करूण-विरह-श्रृंगार रस का राग है, इसलिए कुंज, रास, एवं मान के सुन्दर पद इसी रागमें प्राप्त हैं। भक्त कवि नरसिंह महेता को भी यह राग अतिप्रिय था।

आरोह : **सा, म, प, म॑पधनीसां**

अवरोह : **सांनीधप, म॑पधपम, गमरे, सारेसा**

पकड़ : **सा,मगप, म॑पधपम, सारेसा**

स्वर विस्तार :

१) सारेसा, मगप, म॑पधनीसां, सांनीधप, धनीधप, म॑पधपम, रेसा

२) म॑ प ध नी सां, नी रें सां, गं मं रें सां, नी सां रें सां, नी ध प, म॑ प ध प म, सा रे सा

कीर्तन - १ उष्णकाल शयन समयका पद

तरूवर छांह तीर यमुनाकी
कीर पढावत डोले आलिरी ।।
रूप रास कोऊ नवल किशोरी
मोहन कहि-कहि बोले आलीरी ।।१।।
झुकत झुकावत डार कदंबकी
वेणी सीसपें भ्रमर कलोले ।।
नागरिदास नेह रसमाती बाम
मूंद मूंद द्रग खोले आलीरी ।।२।।

राग : केदार ताल : झपताल मात्रा : १०

स्थायी

X		२			०		३		
सां	सां	ध	प	प	म॑	प	म	म	म
त	रू	व	-	र	छां	-	ह	-	-
ग	म	ध	प	प	म	रे	सा	सा	सा
ती	र	य	-	मु	ना	-	की	-	-
सा	सा	म	म	ग	प	म॑	ध	प	प
की	-	र	-	प	ढा	-	व	-	त
सां	सां	ध	प	प	म॑	प	म	ग	प
डो	-	ले	-	-	आ	ली	री	-	-

अन्तरा

प	प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां
रू	-	प	-	-	रा	स	को	-	उ
ध	नी	सां	सां	रें	नी	सां	ध	ध	प
न	व	ल	-	कि	शो	-	री	-	-

गं	गं	मं	रें	सां	नी	सां	ध	ध	प
मो	-	ह	-	न	क	हि	क	-	हि
म॑	प	धनी	सां	ध	म॑	प	म	ग	प
बो	-	ले-	-	-	आ	ली	री	-	-

स्थायी

X		२			०		३		
सा	सा	म	म	ग	प	म॑	ध	प	प
झु	क	त	-	झु	का	-	व	-	त
म॑	प	ध	नी̲	ध	म॑	प	म	म	म
डा	-	र	-	क	दं	ब	की	-	-
ग	म	ध	ध	प	म	रे	सा	सा	सा
वे	-	णी	-	-	सी	स	पे	-	-
म॑	प	ध	ध	प	म	रे	सा	सा	सा
भ्र	म	र	-	क	लो	-	लें	-	-

अन्तरा

प	प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां
ना	-	ग	-	रि	दा	-	स	-	-
ध	नी	सां	सां	रें	नी	सां	ध	ध	प
ने	ह	र	-	स	मा	ती	बा	-	म
गं	गं	मं	रें	सं	नी	सं	ध	ध	प
मूं	-	द	-	-	मूं	द	द्र	-	ग
म॑	प	धनी	सां	ध	म॑	प	म	ग	प
खो	-	ले	-	-	आ	ली	री	-	-

अद्भूत नट भेख धरे, यमुना तट श्याम सुन्दर
गुणनिधान गिरिवर धर, रास रंग नाचे ।।
युवती यूथ संग लिये, गावत केदारौ राग
अधर वेणु मधुर मधुर, सप्त स्वरन सांचे ।।१।।
उरप तिरप लाग डाट, ततततततत थेई थेई
उघटत शब्दावली गति, भेद कोउ न बांचे ।।
चत्रभुज प्रभु वन विलास, मोहे सब सुर आकाश
निरख थक्यों चंद्र को रथ, पश्चिम नहीं खांचे ।।२।।

राग : केदार ताल : द्रुपद मात्रा : १२

स्थायी

X		०		२		०		३		४	
सां	सां	ध	प	म॑	प	ध	प	म	म	म	म
अ	द्	भू	त	न	ट	भे	-	ख	ध	रे	-
ग	म	ध	ध	प	प	ग	म	रे	रे	सा	सा
य	मु	ना	-	त	ट	श्या	-	म	सु	न्द	र
सा	सा	सा	म	म	ग	प	प	म॑	ध	प	प
गु	ण	नि	धा	-	न	गि	रि	व	र	ध	र
ध	सां	ध	प	म॑	प	ध	प	म	ग	प	प
रा	-	स	रं	-	ग	ना	-	-	चे	-	-

अन्तरा

X		०		२		०		३		४	
प	प	प	सां	सां	सां	सां	सां	नी	रें	सां	सां
यु	व	ती	यु	-	थ	सं	-	ग	लि	ये	-
ध	ध	ध	नी	सां	रें	नी	सां	ध	ध	प	प
गा	-	व	त	के	-	दा	-	रो	रा	-	ग
गं	गं	गं	मं	रें	सां	नी	सां	ध	ध	प	प
अ	ध	र	वे	-	णु	म	धु	र	म	धु	र
म॑	म॑	प	ध	सां	ध	प	म॑	प	म	ग	प
स	-	म	स्व	र	न	सां	-	-	चे	-	-

संचारी

X		०		२		०		३		४	
सा	सा	स	म	म	ग	प	प	म॑	ध	ध	प
उ	र	प	ति	र	प	ला	-	ग	डा	-	ट
म॑	प	ध	सां	ध	प	म॑	प	ध	प	म	म
त	त	त	त	त	त	थे	-	ई	थे	-	ई
ग	म	ध	प	म	सा	रे	रे	स	सा	ऩी	सा
उ	घ	ट	त	श	-	ब्दा	-	व	ली	ग	ति
प	म॑	प	ध	सां	ध	प	म॑	प	म	ग	प
भे	-	द	को	उ	न	बां	-	-	चे	-	-

आभोग

X		०		२		०		३		४	
प	प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	नी	रें	सां	सां
च	त्र	भु	ज	प्र	भु	ब	न	वि	ला	-	स
ध	ध	ध	नी	सां	रें	नी	सां	ध	ध	प	प
मो	-	हे	-	स	ब	सु	र	आ	का	-	श
गं	गं	गं	मं	रें	सां	नी	सां	ध	ध	प	प
नि	र	ख	थ	क्यों	-	चं	द्र	को	र	-	थ
म॑	म॑	प	ध	सां	ध	प	म॑	प	म	ग	प
प	श्वि	म	न	-	हीं	खां	-	-	चे	-	-

राग : बिहाग

‘‘ग-नि संवाद बनायकर, चढ़ते रि-ध कोत्याग।
रात्रि दूसरे प्रहरमें, गावत राग बिहाग॥’’

राग बिहाग बिलावल थाट से उत्पन्न होता है। इस रागकी जाति औड़व-सम्पूर्ण है क्योंकि इसके आरोहमें ‘‘ऋषभ’’ और ‘‘धैवत’’ स्वर वर्जित हैं। अवरोहमें सातों स्वर लिये जाते हैं, फिरभी अवरोहमें ऋषभ और धैवत स्वर अधिक प्रबल नही रखने चाहिए, अन्यथा राग बिलावलकी छाया दीखने का भय रहता है। इस रागमें तीव्र मध्यम स्वरका भी प्रयोग किया जाता है। शेष सभी स्वर शुद्ध हैं। ‘‘पम॑गमग’’ स्वर संगति रागको रोचक बनाती है। बिहाग रागका वादी स्वर ‘‘गांधार’’ और संवादी स्वर ‘‘निषाद’’ है।

राग बिहाग और राग बिहागड़ा को एक ही माननेकी गलती कई करते हैं। राग बिहागड़ा राग बिहागकी अपेक्षा प्राचीन राग माना जाता है।

इस रागका गायन समय रात्रिका दूसरा प्रहर है। साम्प्रदायिक कीर्तन सेवा प्रणालिमें शयन समय और शयनसे लेकर पोढवेकी सेवामें गाये जानेवाले पद इसी रागमें प्राप्त हैं। सायं सेवाकी समाप्तिमें मान, आश्रय, दीनता, विनती और वैराग्यके पद भी अधिकतर इसी रागमें गानेकी प्रथा है।

आरोह : **सा ग, म प, नी सां**

अवरोह : **सां नी ध प, म॑ प ग मग, रे सा**

पकड़ : **ऩीसा, गमप, म॑गमग, रेसा**

स्वर विस्तार :

१) ऩी सा ग म, ग रे सा

२) ग म प नी, ध प, म॑ प ध प, म॑ ग म ग, रे सा

३) ग म प नी सां, नि सां गं रें सां, नी सां नी ध, प, म॑ प, म॑ ग मग, रे सा

४) सा, ग म ग, रे सा

कीर्तन - १ शीतकाल पोढवेको पद

सखियन रूचि रूचि सेज बनाई ।।
रंग महलमें परे हैं परदा, धरी अंगीठी सुखदायी ।।१ ।।
सीतसमें ग्रीष्मऋतुकीनी अतिसुन्दर वरराई ।।
श्रीविठ्ठल गिरिधारी कृपानिधि पोढे ओढ रजाई ।।२ ।।

राग : बिहाग ताल : त्रिताल मात्रा : १६

मुखडा

X				२				०				३			
सा	सा	म	ग	प	प	नी	सां	नी	नी	प	प	ग	म	ग	ग
रू	चि	रू	चि	से	-	ज	ब	ना	-	यी	-	स	खि	य	न
प	सं	नी	ध	म॑	प	ग	म	ग	ग	म	प	ग	रे	सा	सा
रू	चि	रू	चि	से	-	ज	ब	ना	-	-	-	यी	-	-	- ||

अन्तरा

X				२				०				३			
प	प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	नी	सां	नी	ध	नी	सां	नी	नी
रं	-	ग	म	ह	ल	में	-	प	रे	है	-	प	र	दा	-
प	प	ग	म	प	प	नी	सां	नी	नी	प	प	ग	म	ग	ग
ध	री	-	अं	गी	ठी	सु	ख	दा	-	यी	-	स	खि	य	न ||१||

स्थायी

X				२				०				३			
सा	सा	म	ग	प	प	प	प	म॑	म॑	प	म॑	ग	म	ग	ग
सी	-	त	स	में	-	ग्री	-	ष्म	-	ऋ	तु	की	-	नी	-
प	सां	नी	ध	म॑	प	ग	म	ग	ग	म	प	ग	रे	सा	सा
अ	ति	सु	-	न्द	र	व	र	रा	-	-	-	ई	-	-	- ॥

अन्तरा

X				२				०				३			
प	प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	नी	सां	नी	ध	नी	सां	नी	नी
श्री	-	वि	-	ट्ठ	ल	गि	रि	धा	-	री	कृ	पा	-	नि	धि
प	प	ग	म	प	प	नी	सां	नी	नी	प	प	ग	म	ग	ग
पो	-	ढे	-	ओ	-	ढ	र	जा	-	ई	-	स	खि	य	न ॥२॥

कीर्तन - २ श्री गुसांईजीकी बधाईका पद

जे जन शरण आये ते तारे ॥
दीनदयाल प्रकट पुरूषोत्तम, श्री विठ्ठलनाथ ललारे ॥१॥
जितनी रवि छायाकी कणिका, तितने दोष हमारे ॥
तुमारे चरण प्रताप तेजतें, तेऊ ततछिन तारे ॥२॥
माला कंठ तिलक माथें धर, शंख चक्र वपु धारे ॥
माणिकचंद प्रभुके गुण ऐसे, महा पतित निस्तारे ॥३॥

(माला पहेरामनीमें यह पद अवश्य गाया जाता है।)

राग : बिहाग　　　ताल : धमार　　　मात्रा : १४

मुखडा

X					२		०			३			
सासा	म	ग	प	प	नीध	नी	संसं	नी	ध	प	प	ग	म
शर	ण	आ	ये	-	ते-	-	ता-	-	रे	जे	-	ज	न
पसां	नी	ध	प	प	ग	म	गग	म	प	ग	रे	सा	सा
शर	ण	आ	ये	-	ते	-	ता-	-	-	रे	-	-	- ॥

अन्तरा

X					२		०			३			
पप	सां	सां	सां	सां	सां	सां	नीसां	नी	ध	नी	सां	नी	नी
दी-	न	द	या	-	ल	प्र	कट	पु	रु	षो	-	त्त	म
पप	ग	म	प	प	नी	सां	नीनी	प	प	ग	म	ग	ग
श्रीवि	ठ्ठ	ल	ना	-	थ	ल	ला-	रे	-	जे	-	ज	न॥१॥

स्थायी

X					२		०			३			
सासा	म	ग	प	प	प	प	मम	प	म	ग	म	ग	ग
जित	नी	-	र	वि	-	छा	या-	की	-	क	णि	का	-
पसां	नी	ध	प	प	ग	म	गग	म	प	ग	रे	सा	सा
तित	ने	-	दो	-	ष	ह	मा-	-	-	रे	-	-	- ॥

अन्तरा

X					२		०			३			
पप	सां	सां	सां	सां	सां	सां	नीसां	नी	ध	नी	सां	नी	नी
तुमा	रे	-	च	र	ण	प्र	ता-	प	ते	-	ज	तें	-
पप	ग	म	प	प	नी	सां	नीनी	प	प	ग	म	ग	ग
ते-	ऊ	-	त	त	छि	न	टा-	-	रे	जे	-	ज	न ॥२॥

अन्तरा

X					२		०			३			
सासा	म	ग	प	प	प	प	म॑म॑	प	म॑	ग	म	ग	ग
मा-	ला	-	कं	-	ठ	ति	लक	मा	-	थे	-	ध	र
पसां	नी	ध	प	प	ग	म	गग	म	प	ग	रे	सा	सा
शं-	ख	च	-	क्र	व	पु	धा-	-	-	रे	-	-	- ॥

अन्तरा

X					२		०			३			
पप	सां	सां	सां	सां	सां	सां	नीसं	नी	ध	नी	सां	नी	नी
मा-	णि	क	चं	द	प्र	भु	के-	गु	ण	ऐ	-	से	-
पप	ग	म	प	प	नी	सं	नीनी	प	प	ग	म	ग	ग
महा	-	प	ति	त	नि	-	स्ता-	रे	-	जे	-	ज	न ॥३॥

कीर्तन ३ श्री गुसांईजी की बधाई और असीस का पद

राग : बिहाग ताल : धमार

जुग जुग राज करो श्री गोकुल ॥
यह सुख भजन प्रताप तेजतें
छिन इतऊत न टरो ॥ १ ॥
पावन रूप दिखाय महाप्रभु
पतितन ताप हरो ॥
विश्व विदित दीनी गति प्रेतन
क्यों न जगत उद्धरो ॥ २ ॥
श्रीवल्लभकुल कमल अमल रवि
यश मकरंद भरो ॥
नंददास प्रभु षटगुण संपन्न
श्री विठ्ठलेश वरो ॥ ३ ॥

यह पद उपरकी स्वर लिपि अनुसार केसेटमें गाया गया है ।

राग : मांड

थाट : बिलावल ताल : कहेरवा

वक्र जाति का राग है । जाति संपूर्ण ।

वादी : सा, संवादी : प

आरोह : सागरे, मगपम, धपनीधसां

अवरोह : सांध नीप, धमपग, मसा

कीर्तन : १ **आश्रयका पद**

हमारे श्री विठ्ठलनाथ धनी ॥
भवसागरतें काढ महाप्रभु
राख शरण अपनी ॥ १ ॥
जाको नाम रटत निशवासर
शेष सहस्त्र फणी ॥
छीतस्वामी गिरिधरन श्री विठ्ठल
त्रिभुवन मुकुट मणी ॥ २ ॥

राग : मांड ताल : कहेरवा मात्रा : ८

मुखडा

X				०				X				०			
सां	सां	सां	सां	नी	सां	ध	प	प	ध	प	म	ग	म	ध	ध
वि	-	ठ्ठ	ल	ना	-	थ	ध	नी	-	-	ह	मा	रे	श्री	-
प	ध	प	म	ग	ग	रे	सा	सा	सा	सा	सा	गम	पध	नीसां	पध
वि	-	ठ्ठ	ल	ना	-	थ	ध	नी	-	-	ह	मा-	--	रे-	श्री-

अन्तरा

X				०				X				०			
प	ध	रें	रें	रें	रें	रें	सां	सां	रें	मं	गं	रें	सां	सां	सां
भ	व	सा	-	ग	र	तें	-	का	-	ढ	म	हा	-	प्र	भु
नी	नी	नी	सां	ध	ध	म	म	प	प	प	प	धप	नीध	पम	गरे
रा	-	ख	श	र	ण	अ	प	नी	-	-	ह	मा-	--	रे-	श्री-
ग	ग	म	प	ग	ग	रे	सा	सा	सा	सा	सा	गम	पध	नीसां	पध
वि	-	ठ्ठ	ल	ना	-	थ	ध	नी	-	-	ह	मा-	--	रे-	श्री-

स्थायी

म	म	म	म	म	म	म	म	प	प	ध	नी	ध	ध	प	प
जा	-	को	-	ना	-	म	र	ट	त	नि	श	वा	-	स	र
सां	सां	सां	सां	नी	नी	प	ध	सां	सां	सां	सां	रेंसां	गरें	संनी	धप
शे	-	ष	स	ह	-	स्त्र	फ	णी	-	-	-	-	-	-	-

अन्तरा

प	ध	रें	रें	रें	रें	रें	सां	सां	रें	मं	गं	रें	सां	सां	सां
छी	-	त	स्वा	मी	-	गि	रि	ध	र	न	श्री	वि	-	ठ्ठ	ल
नी	नी	नी	सां	ध	ध	म	म	प	प	प	प	धप	नीध	पम	गरे
त्रि	भु	व	न	मु	कु	ट	म	णी	-	-	ह	मा-	--	रे-	श्री-
ग	ग	म	प	ग	ग	रे	सा	सा	सा	सा	सा	गम	पध	नीसां	पध
वि	-	ठ्ठ	ल	ना	-	थ	ध	नी	-	-	ह	मा-	--	रे-	श्री-

राग : मांड ताल : कहेरवा

बडो धन हरिजनको हरिनाम ॥
बिनु रखवार चोर नहि चोरे
सोवत है सुखधाम ॥ १ ॥
दिन दिन बढत सवायो दूनो
घटत नहि कछु दाम ॥
सूरदास हरि सेवा जाके
परिसके कहा काम ॥ २ ॥

यह पद उपरकी स्वर लिपी अनुसार केसेटमें गाया गया है ।

॥ श्री कुंभनदासजी ॥

अष्टछाप सखामंडलमें जिनका प्रथम स्थान है वे महानुभाव भक्तकवि श्री कुंभनदासजी हैं। श्रीनाथजीकी कीर्तनसेवाके लिए महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजीने सर्वप्रथम श्रीकुंभनदासजीकी नियुक्ति की थी। अनेक दैवी लक्षणोंसे युक्त, स्वच्छ आयनेके समान प्रकाशित, उनकी जीवनगंगामें गोता लगा कर कुछ भगवद्‌कथा रसरूपी मोती हम प्राप्त करेंगे।

श्री कुंभनदासजीका जीवन ही पुष्टिमार्गीय सिद्धान्तोंका जीवंत उदाहरण है। संयोग और विप्रयोगमें, प्रेमासक्ति और व्यसनमें परिणमित, निरोध भक्तिसे जिनके जीवनकी प्रत्येक क्षण परिपूर्ण है ऐसे महानुभावका जन्म संवत १५२५में व्रजमें श्री गोवर्धनके पास जमुनावता गाँवमें हुआ था। जातिसे वे गोरवा क्षत्रिय थे। कुंभके मेलेमें किसी संतकी कृपा प्रसादसे पिता भगवानदासको यह पुत्ररत्न प्राप्त हुआ था इसलिए पिताने उनका नाम कुंभनदास रखा था। आठ-नौ वर्ष जैसी अल्पायुमें पिताकी मृत्यु हो गई और काका धर्मदासजीने बाल्यकालमें उनका पालन-पोषण किया । कथा-कीर्तन, सत्संग, अध्ययनके संस्कार अपने काकासे उन्हें मिले थे। बचपनसे ही मधुर कंठ, काव्यरचना एवं गायनकलाकी ईश्वरदत्त भेंट उन्हें मिली थी जो उनकी पदरचनाओंमें प्रतिबिंबित होती हैं।

श्री महाप्रभुजीकी प्रथम भारतयात्राके समय गिरिराजजीमें से भगवद्‌स्वरूपका प्राकट्य हुआ था जिन्हें ''देवदमन'' के नामसे ब्रजवासी जानते थे। बादमें जब श्री महाप्रभुजी कुछ वर्षोंके बाद पुनः गोवर्धन पधारे तब आपने एक छोटासा मन्दिर बनवा कर श्रीनाथजीको वहां प्रस्थापित किये और सदूपांडे, रामदास चौहान और कुंभनदासजीको श्रीजीकी भोग-शृंगार-कीर्तन सेवामें नियुक्त किये।

कुंभनदासजीकी तरूणावस्थामें उनका विवाह संपन्न हुआ। पति-पत्नी दोनों श्रीमहाप्रभुजीकी शरणमें आये और श्रीवल्लभाचार्यजीने उन्हें नामनिवेदन करवाया। वे लीलाके दैवी जीव थे। श्रीवल्लभ जैसे समर्थ गुरूकी कृपा प्राप्त होते ही और प्रभु श्रीगोवर्धननाथके सन्मुख होते ही उनके मनमें दिव्य भाव प्रगट होने लगे। पूर्वज्ञानकी उनकी धारा अब भक्ति सरिता बन कर बहने लगी। उनकी बानीसे प्रगट हुआ यह पद उनके दिव्य मनोभावोंको स्पष्ट रूपसे प्रगट करता है।

''ऐसी की तुम बिन कृपा करे, लेत सरन ततछिन करूणानिधि त्रिविध संताप हरे'' ।

श्री वल्लभाचार्यजीने जब श्रीनाथजीके सन्मुख भगवत्लीलात्मक कीर्तनगान करनेका आदेश दिया तब उन्होंने श्रीजी को दंडवत्-प्रणाम करके प्रथम कीर्तन राग बिलावल और ताल धमारमें ''सांझ के साँचे बोल तिहारे'' खंडिताका किया जो आज तक प्राय: उष्णकालमें गाया जाता है। यह कीर्तन सुनकर श्री महाप्रभुजीने अतिप्रसन्न हो कर कहा कि कुंभनदासको निकुंजलीला संबंधी रसको अनुभव भयो। इस प्रकार श्रीकुंभनदासजी प्रतिदिन श्रीजी सन्मुख अष्टयाम कीर्तन सेवा करते और नित्य नई पदरचना करके श्रीजीको रीझाते; उनके श्रीमुख दर्शनसे परमानंदकी प्राप्ति करते।

एक बार मुगलोंके आक्रमणका समाचार सुन कर कुंभनदासजी और अन्य सेवक चिंतित हो गए। प्रभुके सुखके लिए श्रीजीकी आज्ञानुसार उन्हें मन्दिरसे पधरा कर एक घने जंगलमें जो बहुत ही दुर्गम था, कंकर-कंटकोसें भरा था, वहाँ कोई वाहन भी पहुंच नहीं सकता था इसलिये भैंस पर श्रीठाकुरजीको छिपा कर ले गये। इस घनी निकुंजमें एक सरोवरके पास सुंदर वातावरणमें श्यामतमाल और कदंबके वृक्षनीचे एक चोतरे पर श्रीनाथजीको पधाराये उसी समय श्री स्वामिनीजी वहां पधारे और युगलस्वरूपने सहभोजन किया। इस दिव्यलीलाके दर्शन कर श्रीजीकी आज्ञानुसार कुंभनदासजीने ''भावत तोहि टोंडको घनो'' यह पद गान किया। बादमें म्लेच्छोंका उपद्रव शान्त होने पर श्रीजी पुन: मंदिरमें बिराजमान हुए तब राग श्री और चर्चरी तालमें गिरिराजजी, श्रीजी और व्रजभूमिका माहात्म्य गान करते हुए ''जयति जयति श्री हरिदासवर्य धरणे'' पद गाया और रासका पद ''तरनि तनया तीर रासमंडल रच्यो'' गाया।

कुंभनदासजीका परिवार विशाल था। श्री महाप्रभुजीकी कृपासे उन्हें सात पुत्र हुए किन्तु इन सातमेंसे वे स्वयंको डेढ पुत्रके ही पिता मानते थे। ''निरोधलक्षण'' ग्रंथ में श्री वल्लभकी आज्ञा ''पुत्रे कृष्णप्रिये रति:'' अर्थात् श्रीकृष्ण जिन्हें प्रिय हैं ऐसे ही पुत्रमें प्रीति रखनी, समझपूर्वक जीवनमें ग्रहण की थी। एक पुत्र श्री चतुर्भुजदासजी थे। वे अपने पिताकी तरह भगवद्भक्त, साहित्यप्रेमी और कीर्तनसेवा परायण थे। चतुर्भुजदासजी, श्रीजी की नामसेवा

और स्वरूपसेवा दोनों ही करते थे इसलिए वे पूरे पुत्र थे। दूसरे पुत्र श्री कृष्णदास थे, जो श्रीगोवर्धननाथजीकी गायोंकी सेवा मन लगाके करते थे, किन्तु नामसेवामें उनका मन नहीं था। इसलिए उन्हें आधा पुत्र ही मानते थे। उनके बडे परिवारमें सात पुत्र और पुत्रवधू और एक विधवा भतीजी भी थी। कृषिसे उत्पन्न आजीविकासे सबका निर्वाह करना कठिन था। फिर भी वे किसीके सामने हाथ नहीं पसारते थे और श्रीनाथजीके प्रति अनन्य तन्मयताके कारण राज द्रव्यका भी उन्होंने अस्वीकार किया था। उनकी निर्लोभता और निर्भीकता दो प्रसंगोसे हमें ज्ञात होती है।

एक समय राजा मानसिंह श्रीजीके दर्शनार्थ आये। वहां कुंभनदासजी राग नटमें ''रूप देख नैना पलक लागे नहीं'' श्रीजीके सन्मुख भावविभोर हो कर गा रहे थे। यह पद सुन कर वे इतने प्रभावित हुए कि कुंभनदासजीको मिलनेकी ईच्छासे जमुनावता पहुंचे। उसी समय श्रीजी कुंभनदासजीकी गोदमें बिराज कर कुछ बातें कर रहे थे। राजा मानसिंहको आते देख कर श्रीजी एक वृक्षके पीछे छिप गये। यह देख कर कुंभनदासजी इतने व्यथित हुए कि मानसिंहके आगमनका उन्हें पता ही नहीं चला। तब श्रीजीने ईशारेसे उन्हें आश्वासन दिया। इस समय वे स्नान करके बैठे थे और अपनी भतीजीसे तिलक करनेके लिए आसन और आरसी मांगे। भतीजीने उत्तरमें कहा कि, ''आसन खाईके आरसी पड़िया पी गई।'' इस बातसे राजाको अति आश्चर्य हुआ और भतीजीको पूछने पर उन्हें पता चला कि विषम आर्थिक परिस्थितिके क़ारण और तो कोइ साधन नहीं था, आसनमें घासकी पली और दर्पणके रूपमें पानीका पड़िया था जो गाय आ कर खा गई। राजा मानसिंहने उसी समय अपना रत्नजड़ित दर्पण, १००० सुवर्णमुद्राएं और जमुनावता गांव भेंटमें देना चाहा किन्तु इस निर्लोभी भक्तने यह स्वीकार नहीं किया। तब मानसिंहने उनके मोदीका नाम पूछने पर उन्होंने बताया कि ये बेर और टेंटी के वृक्ष मेरे मोदी हैं जो मुझे वर्ष भर फल देते हैं। ऐसे त्यागमूर्ति निःस्पृह भक्तके सामने राजा नतमस्तक हो गया।

त्यागमूर्ति भक्त निर्भीक भी थे। एक समय उनकी पदरचनासे प्रभावित बादशाह अकबरने उन्हे अपने दरबारमें आमंत्रित किये। श्रीजीका क्षणिक वियोग भी उनके लिए असह्य था। फिर भी बादशाहका फरमान था। वे दरबारमें गये। बडे मान-सम्मानसे बादशाहने उनका सत्कार किया और कुछ नवीन पदगान

करनेकी आज्ञा दी। तब कुंभनदासजीने मधुर कंठसे पद गान किया, ''भक्तको कहा सीकरीसों काम, आवत जात पन्हैया टूटी, बिसर गयो हरिनाम'' यह पद सुन कर सभी लोग संगीतमें मुग्ध होकर झूमने लगे किन्तु बादशाहके लिए ये शब्द अपमानजनक थे। फिर भी गुणग्राही सम्राटने इस निर्भीक, निर्मोही, त्यागी भक्तकविको बड़े आदरके साथ वापस लौटाये। उनका हृदय तो श्रीजीके विरहसे तड़प रहा था और ''कब हों देखि हों इन नैनन'' और ''हिलगन कठिन है या मनकी'' इत्यादि पद गाये। प्रभुके दर्शन होने पर ही उनका मन शांत हुआ और ''नैन भर देखे नन्दकुमार'' यह पद राग धनाश्रीमें श्रीजीके सम्मुख उन्होंने गाया।

प्रभुके मुखदर्शन बिना वे कितने व्यकुल हो जाते थे इसका अंदाज इन प्रसंगोसे हम लगा सकते हैं। कुंभनदासजीके पुत्र कृष्णदासजीकी श्रीजीकी गौसेवा करते देहांत हुई। ये समाचार सुनते ही वे बेहोश हो गये। सबके लाख प्रयत्न करने पर भी उन्हें होश नहीं आया। अंतमें किसीने श्री गुसांईजीको खबर दी । वे तो अंतर्यामी थे। उन्होंने पधार कर कुंभनदासजीसे कहा, आपको पुत्र जानेके दुःखसे अधिक श्रीजीका विरह सता रहा है। उठो, तुम सूतकमें भी श्रीजीके दर्शन कर सकोगे। तब उन्हें होश आया। सूतक लगने से केवल एक बार दर्शन सुख मिलताथा, शेष समयमें श्रीजीके विरहके पद उनके अंतरसे स्फुरित होते रहते थे। जैसे कि,
''तुम्हारे मिलन बिना दुःखित गोपाल...'' ''अब दिन रात पहारसे भये...''
''औरनको समीप, बिछुरनो आयो हो मेरे हिसा...'' इत्यादि.

दूसरे प्रसंगमें श्रीगुसांईजीने परदेशगमनमें अपने साथ आनेकी आज्ञा की। श्रीजीकी राजभोग सेवा के पश्चात गिरिराजजीके अप्सराकुंड पर सायंकालीन विश्राम हुआ। श्रीजीके उत्कट विप्रयोगसे द्रवित हृदयमें उनके मुखसे ''केतिक दिन व्हे जु गये बिन देखे...'' यह पद आंखोमें अश्रूधाराके साथ बहने लगा। विप्रयोगकी ऐसी पराकाष्ठा देख कर श्रीगुसांईजीने उसी क्षण उन्हें श्रीगोवर्धनधरणकी सेवामें जानेका आदेश दिया और कहा कि तुम्हारी यात्रा यहीं समाप्त हो गई।

कुंभनदासजीको सदैव लीलाका अनुभव होता रहता था। युगलस्वरूपके अनेक पद आपकी बानीसे प्रगट हुए हैं। कुंभनदासजीकी प्रसिद्धि दूर दूर तक फैल गई थी। वृंदावनके अनेक संत महंतो तक उनकी ख्याति पहुंची थी। स्वामी हरिदासजी और

हित हरिवंशजी ईत्यादि उन्हें मिलने आये। वे राधा सम्प्रदायके प्रमुख थे इसलिए उन्होंने श्रीस्वामिनीजीके पदगान सुननेकी ईच्छा व्यक्त की। तब उन्होंने श्रीस्वामिनीजीका ध्यान किया और ये अति सुंदर पद राग रामकलीमें उन्होंने गाया। "कुंवरि राधिका तुव सकल सौभाग्य सींव, वदन पर कोटि शत चंद्र वारों"

कितना मनोहारी वर्णन! उनकी बानीसे प्रगटे अगणित पद प्रभुकी दिव्य रसमय लीलाओं के दर्शन कराते हैं। प्रभुकी बाललीलाके, गोप गोकुलके प्यारे श्यामसुंदरके, व्रजस्त्रीरमण नटनागर इन तीनों स्वरूपोंके अनेकविध पद उन्होंने रचे हैं। उनकी आसक्ति श्यामा-श्यामकी निकुंजलीला और युगलस्वरूप वर्णनमें अधिक रही है।

कुंभनदासजी लीलामें "अर्जुन सखा" और "विशाखा सखी" हैं। निकुंजलीलामें उनकी आसक्ति थी। अष्टयाम सेवामें राजभोग समयकी कीर्तनसेवामें उनकी आसक्ति थी। छाकके भी अनेक पद आपने रचे हैं। "ब्रजमें बडो मेवा एक टेंटी" और "अहो घर घर तें आई छाक" ईत्यादि प्रसिद्ध हैं। शृंगारमें कुल्हे के शृंगारमें उनकी आसक्ति थी। संयोगात्मक राजस सख्य भक्ति उनकी थी। अष्टसखाओमें सबसे दीर्घजीवी श्रीकुंभनदासजी थे। करीब ११५वर्षकी उनकी आयुमें श्रीनाथजी, श्रीमहाप्रभुजी, श्रीगुसांईजी की सेवा की। उनकी करीब ४०० पदरचनाएं प्राप्त हैं जो करीबन ३३ रागोंमें हैं। संगीतके अनेक पारिभाषिक शब्द और विविध वाद्योंके नाम उनके पदोंमें मिलते हैं जिससे उनके शास्त्रीय संगीत ज्ञान और प्रबल काव्य शक्तिकी झांकी मिलती है।

संवत १६४०में आन्योर के पास संकर्षण कुंड पर भगवद्लीलाका गान करते हुए उन्होंने भौतिक शरीरका परित्याग किया। उस समय श्री गुसांईजी एवं उनके परिवारजन वहां उपस्थित थे । श्री गुसांईजीने पूछा कि, कुंभनदासजी आपकी चित्तवृत्ति किस लीलामें रममाण है ? तब वे अंतर्मुख हो कर भावसमाधिमें लीन हो गये और "बिसर गयो लाल करत गौदोहन..." जैसी लीलाका गान करते इहलीला समेट कर श्रीजीकी निकुंज सेवामें पहोंच गये।

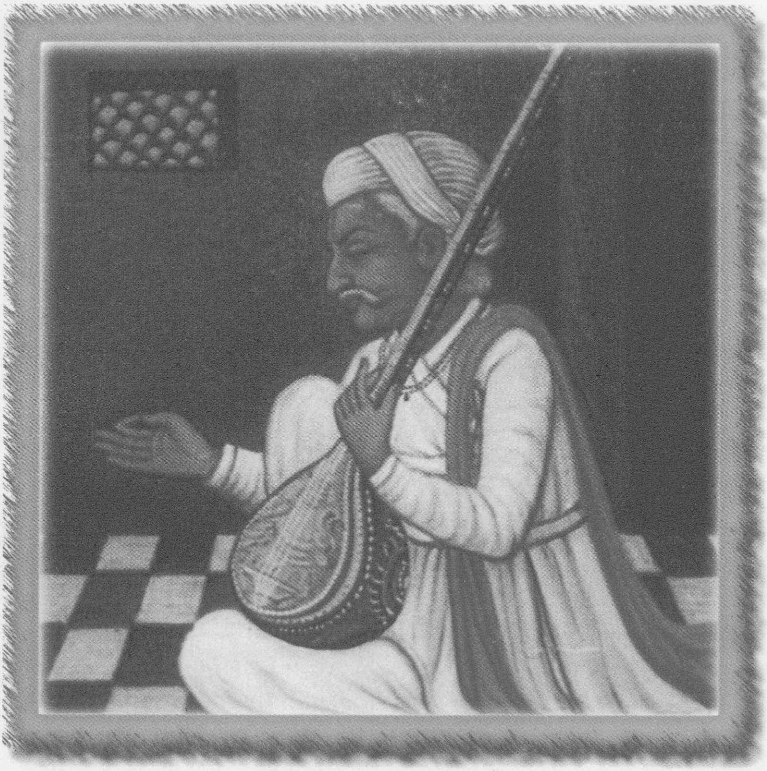

श्री कुंभनदासजी

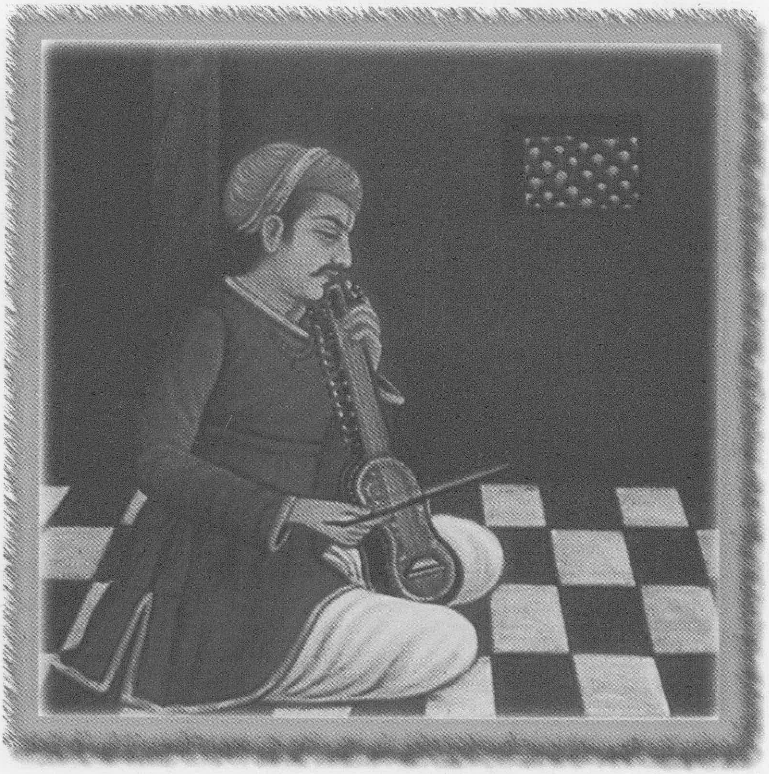

श्री चतुर्भुजदासजी

॥ श्री चतुर्भुजदासजी ॥

सम्प्रदायके प्रथम कीर्तनकार श्री कुंभनदासजीके छोटे पुत्र श्री चतुर्भुजदासजी थे। आपका जन्म जीवन और मृत्यु अलौकिक थे। आपके पिता श्री कुंभनदासजी सदैव भगवद्लीलामें मग्न रहते थें। श्रीनाथजी उनके साथे खेलते, सानुभाव जताते फिर भी वे उदास रहते थे क्योंकि प्रभुकी ऐसी दिव्य रसात्मक लीलाओंका अवगाहन करनेवाला एक सत्संगी पुत्र हो ऐसी उनकी अभिलाषा थी। प्रभुने उनके इस सत्संकल्पको पूर्ण किया।

एक बार श्रीनाथजीने अपने साथ माखनचोरीलीलामें आनेके लिए कुंभनदासजीको आज्ञा की। किसी व्रजांगनाके घरमें ऊखल पर चढ़के ऊंची लटकायी हुई मथनीमेंसे गोरस अरोगते हुए श्रीजीका पीताम्बर अनायास कटि परसे नीचे सरका। "रसो वै सः" प्रभुके निरावरण रसमय सर्वांगकी झांकी उन्हें हुई। उसी समय श्रीजीने निजेच्छासे दूसरे दो श्रीहस्त प्रगट किये और अपना पीताम्बर पुनः संवार लिया। इस अद्भूत चतुर्भुजस्वरूप का दर्शन कुंभनदासजीके हृदयमें बस गया। घर आते ही उन्हें पुत्रजन्मकी बधाई मिली। प्रभुके उस चतुर्भुजधारी मनोहर स्वरूपके स्मरणरूप उसी समय कुंभनदासजीने पुत्रका नाम चतुर्भुजदास रख दिया।

केवल ४१ दिनकी वयमें चतुर्भुजदासजीको नाम और निवेदन श्रीगुसांईजीने कराया। बालकके हाथसे तुलसी ले कर चरणोमें समर्पते ही श्रीजीने बडा अद्भूत स्मित किया जिससे चतुर्भुजदासकी अलौकिकताकी प्रतीति होती है। आपने अधरामृत प्रसाद और चर्वित तांबुल दे कर चतुर्भुजदासमें अलौकिक सामर्थ्यका स्थापन किया। उनकी अलौकिकता, काव्यप्रतिभा और सख्यभावको देख कर अष्टछाप सखामंडलीमें श्री गुसांईजीने उन्हें सम्मिलित किये। अष्टसखामंडलीमें वयोवृद्ध पिता और तरूण पुत्र दोनोंका एक ही साथ होना दोनोंके लिए गौरवकी बात थी।

एक समय पिता-पुत्र दोनों अपने घरमें अर्धरात्रिके समय बैठे थे। वहांसे श्रीनाथजीके मंदिरके झरोखेमें प्रज्वलित दीपकको देख कर कुंभनदासजीको श्रीजीके पोढ़वेकी लीलाका अनुभव हुआ और उन्होंने "वे देखो बरत झरोखन दीपक हरि पोढ़े ऊंची चित्रसारी" इस पंक्तिका गान किया। इतना कह कर वे

चुप हो गये। तब चतुर्भुजदासको श्री गुसांईजीकी कृपासे और श्री महाप्रभुजीकी कानि से उसी लीलाका अनुभव हुआ और उन्होंने ''सुंदर वदन निहारन कारन, राखे हैं बहुत जतन कर प्यारी'' कह कर उस तुककी पूर्ति की। उनकी बाल्यकालीन काव्य शक्ति और गुरुकृपाका पता इस प्रसंगसे चलता है।

एक समय श्री गुसांईजीकी आज्ञासे श्रीजीकी सेवाके लिए पुष्प चुनने वे अप्सराकुंडकी ओर श्री गिरिराजजीकी एक कंदराके पास पहुंचे। वहां उन्हें रतिचिह्नोंसे अंकित श्रीयुगलस्वरूपके दर्शन हुए। आनंदसे विभोर होते उन्होंने ''गोवर्धनगिरि सघन कंदरा, रैन निवास कियो पियप्यारी'' यह पद गान किया, जिससे प्रसन्न हो कर श्रीनाथजीने दूसरा पद गानेकी आज्ञा की। तब उन्होंने ''रजनी राज कियो, निकुंज नगरकी रानी'' यह पद गाया। युगलस्वरूपके ऐसे अद्भूत दर्शन उन्हें होते थे।

एकदा श्री महाप्रभुजीके उत्सव पर शृंगार के दर्शन करते ही उन्होंने ''सुभग सिंगार निरख मोहनको ले दर्पण कर पिय ही दिखावे'' यह पद गाया; क्योंकि उन्हें श्री स्वामिनीजीने स्वयं श्रीजीके जो शृंगार और सामग्री अपने हाथसे धराये थे उसीकी झांकी हो रही थी। जन्मोत्सवकी बधाईके स्थान पर यह पद सुनकर वैष्णवोंको बड़ा आश्चर्य हुआ तब उनके संदेह निवारणार्थ श्रीगुसांईजीकी आज्ञासे गोविन्दकुंड पर ''आज और काल्ह और छिन प्रति और और, देखिये रसिक श्री गिरिराजधरन'' पद भी गाया।

चतुर्भुजदासजीको श्रीजीकी अनेकविध लीलाओंके दर्शन होते थे। एक बार श्रीगोकुलनाथजी आदि बालकोंने परासोलीमें रासमंडलीके पास रासलीलाका नृत्य कराया और चतुर्भुजदासजीको कुछ गानेकी आज्ञाकी। तब उन्होंने उत्तर दिया कि रासेश्वर प्रभु तो श्री गिरिराजजी पर बिराज रहे हैं, वे रास करें तो मैं कुछ गा सकुं। श्रीनाथजीके स्वरूपमें उनकी इतनी आसक्ति थी कि उसी समय श्री गिरिधरजीको साथ ले कर श्रीनाथजी वहां पधारे तब जो रासनृत्य हुआ उसके दर्शन करके ''अद्भुत नट भेख धरे यमुना तट श्यामसुन्दर'' यह पद राग केदारमें गाया। इसी रसपूर्ण लीलामें पूरी रात्रि व्यतीत हो गई। सभी रासरंगमें झूम रहे थे तब श्रीजीको समयकी सुधि दिवाते हुए उन्होंने राग भैरवमें ''प्यारी भुज ग्रीवामेलि, निर्तत पिय सुजान'' यह पद गाया।

श्री गोवर्धनधरकी रसात्मक किशोरलीलामें उन्हें अधिक आसक्ति थी फिरभी एक दिन श्रीगोकुलेशजीने उन्हें अपने साथ गोकुल आनेकी आज्ञा की। वहां श्री नवनीतप्रियाजीके दर्शन श्री गुसांईजीने उन्हें कराये। उसी क्षण उन्हें गोकुललीलाकी स्फूर्ति हुई और श्री नवनीतप्रियाजीकी बाललीलाके साक्षात् दर्शन करते ही "महामहोत्सव श्रीगोकुलगाम" और "अंगुरि छांड रेंगत अरग-थरग, नूपुर बाजत ज्यों ज्यों धरत पग" यह पद गान किया। बादमें उन्हें उराहना लीलाके भी दर्शन हुए तब "दिन दिन देन उराहनो आवे यह ग्वालिन जोबन मदमाती, झुठे हि दोष लगावे" और "हों वारि नवनीतप्रिया नित उठि देन उराहनो आवत, चोरी लगावत घोषत्रिया" ऐसे अनेक पद गाये। उनकी आसक्ति श्रीजीके दर्शनमें इतनी थी कि श्रीजीके दर्शन बिना उन्हें चैन नहीं होता था। श्रीजी द्वार पहुंचतेही श्री गोवर्धनधरके दर्शन करने पर उन्हें अभीष्ट सुख मिला और "तब तें और कछुन सुहाय सुंदर श्याम जबहींते देखे, खिरक दुहावत गाय" यह पद गाया।

एक बार उन्हें देशान्तर विरहका दान करनेकी ईच्छासे श्रीजी मेहमान बनके मथुरा पधारे। वहां उन्होंने सभी गोस्वामी बालक, बहुजी, बेटीजीके साथ फागुनोत्सव (खेल) मनाया। सबने अपना सर्वस्व श्रीजीको समर्पण किया किन्तु एक छोटे बेटीजीने अपनी प्रिय अंगूठी छिपाई जो श्रीजीने अधिकारपूर्वक मांगली और श्रीवल्लभवंशजसे अपनी आत्मीयता प्रगट की। यहां श्री गिरिराजजी पर श्रीजीके दर्शन न होनेसे चतुर्भुजदासजीको तीव्र विरहका अनुभव होने लगा और हिलग - विरहके पद गाते रहे। "बात हिलगकी कासों कहिये" और "श्री गोवर्धनवासी सांवरे लाल तुम बिन रह्यो न जाय हो" इत्यादि विरहभावके पद उनकी बानीसे प्रगट हुए।

चतुर्भुजदासजी अपने पिताके समान त्याग और वैराग्यकी भावनावाले थे। विवाह करके संसारके बंधनोमें पड़ना नहीं चाहते थे। फिर भी श्रीनाथजीकी आज्ञाको शिरोधार्य करके उन्होंने विवाह किया। कुछ समय बाद पत्नीका देहान्त हो गया तब सूतकके कारण श्रीनाथजीके दर्शनमें विक्षेप हुआ। यही अलौकिक दुःख उन्हें सताने लगा और वे प्रभुविरहमें "श्यामसुन्दर प्रानप्यारे, छिन जिन होऊ न्यारे" इत्यादि पद गाने लगे। सूतकनिवृत्तिके बाद फिर से श्रीजीके मनोहारी स्वरूपका सुखानुभव होने लगा। किन्तु रसकौतुकी श्रीजीको ऐसी कौतुकलीला करनेकी ईच्छा हुई और उन्होंने चतुर्भुजदासजीको पुनः विवाह करनेकी आज्ञा की। सदूपांडेसे कह कर, एक

विधवासे उनका विवाह संपन्न कराया। प्रभुके सुखार्थ उन्होंने यह विवाह किया था और श्रीजी भी अपनी सख्यता जताते हुए इस बात पर उन्हें चिड़ाते रहते थे। उनके राघवदास नामक पुत्ररत्न हुआ जो एक अच्छा कवि और भक्त था।

चतुर्भुजदासजीका संगीत और नृत्यकलाका ज्ञान भी अगाध था। मंगला, खंडिता, शृंगार, हिलग राजभोग, गोदोहन, व्यारू, उराहना, जन्माष्टमी, पलना, बाललीला, रासलीला इत्यादि पदोंमें भिन्न भिन्न रागोंके नाम, पारिभाषिक शब्दोंकी रचना, अलग अलग वाद्योके नामोल्लेख उनके अनेकविध पदोंमें हमें मिलते हैं। उनके अनुभवैक वर्णन "खटऋतुवार्ता" में ३६ राग- रागिनीयोंके नाम हमें प्राप्त होते हैं। विप्रयोगात्मक राजस सख्य भक्ति उनकी थी। अपने आराध्य देव श्रीनाथजीमें और श्री विठ्ठलनाथजीमें उनका अकल्प्य एकात्म भाव था। संवत् १६४२में जब श्री गुसांईजी सदेह श्री गिरिराजजीकी कंदरामें पधार गये और अपना उपरना लौकिक संस्कार करनेके लिए श्री गिरिधरजीको दिया तब चतुर्भुजदासजीको यह समाचार मिलते ही बहुत दु:ख हुआ। उनके व्यथापूर्ण हृदयसे यह शब्द निकल पडे "फिर ब्रज बसो श्री विठ्ठलेश, कृपा करिके दरस दिखावहु वह लीला वह वेष"। विरहावस्थासे उनका हृदय फटा जा रहा था। तब श्री गुसांईजीने कुछ क्षणोंके लिये केवल चतुर्भुजदासजीको अपने दिव्य दर्शन दिये। बादमें चतुर्भुजदासजीने "श्री विठ्ठलनाथसों प्रभु भयो न व्हे है श्री वल्लभसुत दरसन कारन अब सब कोउ तपे है" अपने गुरूके गुणगान करते हुए उनके चरणकमलमें अपना चित्त एकाग्र करके रूद्रकुंडके पास एक ईमलीके वृक्षके नीचे देहत्याग किया।

चतुर्भुजदासजी जन्मसे गोरवा क्षत्रिय थे। उनका जन्मसमय संवत् १५९७ माना जाता है। लीलात्मक स्वरूपमें वे विशाल सखा और विमला सखी हैं। प्रभुकी गोवर्धनलीला और दुमालाके शृंगारमें उनकी आसक्ति थी। उनके करीब २०० पद प्राप्त होते हैं। जन्मसे श्री वल्लभ संप्रदायमें रूचि और अभ्यास, संस्कृतमें विद्धत्ता, गानविद्यामें निपुणता और काव्यशक्ति उन्हें परंपरामें प्राप्त हुई। उनका लीला प्रवेश समय संवत् १६४२ और स्थान रूद्रकुंड है। अष्टछापसे उनमें और उनसे अष्टछापमें ऐसी परिपूर्णता आई जो पुष्टि कीर्तन साहित्यकी, हिन्दी साहित्यकी अमर, अप्रतिम निधि बनकर आज भी आदरणीय स्थान पर है। श्री गुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय श्री चतुर्भुजदासजी थे।

सुज्ञ वैष्णव,

प्रभुकी लीलाओंके कीर्तन-गुणगान द्वारा अपना चित्त शीध्रतासे प्रभुमें निरूद्ध हो जाता है और अपनी लीलाका गान सुन कर प्रभु शीध्र प्रसन्न होते हैं। इसीलिये ''कीर्तनसेवा''को अष्टयाम सेवामें विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ है। स्वसेव्य प्रभुको रीझाने के लिए प्रत्येक वैष्णव अपने स्वगृहमें भी पारंपारिक एवं शास्त्रीय पद्धतिसे कीर्तनगान कर सके ऐसे उच्च हेतुसे और प्रभुकृपासे पुष्टिभक्तिसंगीतका पंचवर्षिय अभ्यासक्रम तैयार किया है; जिसमें मंगला से शयन पर्यंतके प्रणालीके अनुसार गाये जानेवाले सभी रागोंका समावेश है। ''कीर्तन प्रवेशिका'' से प्रारंभ कर ''कीर्तन विशारद'' पर्यंत यह अभ्यासक्रम है; जिस अन्तर्गत यह तृतीय पुस्तिका एवं इसकी पूरक ऑडियो केसेट उपलब्ध है। केसेटमें पुस्तिकामें दिये गये रागोंका कीर्तन स्वरलीपिके साथ गायन करके सिखाये है और संगीत विषयक प्रारंभिक जानकारी, ताल, झांझ इत्यादि बजा कर सिखाया जाता है। आशा है कि आपको यह अभ्यासक्रम पसंद आयेगा। प्रत्येक वर्ष विभिन्न केंन्द्रोंसे ये परीक्षाअें ली जाती है और उत्तीर्ण विद्यार्थीओंको प्रमाणपत्र दिया जाता है। यदि आप परीक्षा देकर सहभागी बनना चाहते हो तो विशेष जानकारी के लिए कृपया निम्नलिखित कूपन पर अपना नाम व पत्ता लिख कर हमें भेजें।

नाम : ____________________

पत्ता : ____________________

____

दूरभाष नं. : ____________________

हमारा पत्ता :

आंतरराष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद
जी/२, सीताराम बिल्डींग, पल्टन रोड, मुंबई - ४०० ००१.

श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट
श्री जीतुभाई शाह, श्री यमुना मार्केटींग, गोपाल निवास,
१७६, लोहार चाल, मुंबई - ४०० ००२.

॥ श्री वल्लभ ॥

कीर्तनकार
श्री जमनाप्रसादजी शर्मा

कीर्तन अनुरागी वैष्णवजन,

पूजात्कोटिगुणं स्तोत्रं स्तोत्रात्कोटिगुणो जपः ।
जपात्कोटिगुणं गानं गानात्परतरं न हि ॥

पूजासे कोटि गुना फल स्तोत्र पाठ से है, स्तोत्रपाठसे कोटि गुना फल जपसे है और जपसे कोटि गुना फल कीर्तनगानसे है। तथा कीर्तन गान से परे और कुछ नहीं।

इसका अर्थ है कि कीर्तन गान ही सर्वोत्तम सेवा है। हमारे पुष्टिपुरूषोत्तम प्रभु कीर्तनगान से ही जगते हैं, अरोगते है, खेलते हैं और पोढ़ते हैं। प्रभुचरण श्री गुसांईजीने अष्टयाम सेवाक्रममें राग को बडा ही महतवपूर्ण स्थान दिया है। उत्तमोत्तम राग-रागिनीयोका कीर्तन गान द्वारा मंगलासे शयन पर्यन्तकी सेवामें विनियोग कराया है। चारों प्रकारके वाद्य विविध समय एवं ऋतु क्रमानुसार वीणा, तंबुर, सांरगी, इत्यादि तंतुवाद्य, शंख, बांसुरी इत्यादि शीषिर वाद्य, घंटा झांझ इत्यादि घनवाद्य और नगाडे, पखावज आदि अवनद्ध वाद्योंका भी विनियोग कीर्तनगानके साथ किया है। एवं होरीके दिनोंमें मुखौटोंवाला नृत्य, फागुनोत्सव, नंदोत्सव इत्यादि द्वारा भावनृत्य एवं कीर्तनके शब्दोंके साथ शास्त्रीय नृत्यकलाका भी विनियोग श्री प्रभुको रिझानेके लिए किया है। इस तरह हमारे यहां पांचों ललितकलाओंमेंसे संगीतकलाका विशिष्ट स्थान बना हुआ है।

अष्टछाप भक्त कवियोंने श्रीमहाप्रभुजीकी कृपासे प्रभुकी लीलाओंका जैसा दर्शन किया उन्हींका वर्णन कीर्तन द्वारा उनके मुखसे स्त्रवित हुआ। इसलिए कीर्तनगान करते समय शब्दोंका उच्चारण स्पष्ट और भावपूर्ण होना अति आवश्यक है। कीर्तनमें स्वरोंकी मधुरता हो, ताल सही हो एवं रागकी शुद्धताका ध्यान रखा जाय तो अवश्य ही ऐसे भावपूर्ण गायनसे प्रभु शीघ्र रिझते हैं और प्राणीमात्रके त्रिविध ताप नष्ट होते हैं। इसलिए कीर्तनगानमें मधुरता एवं तल्लीनता होनी चाहिए, अनावश्यक चिल्लाना या जोर जोर से गाना वर्जित है। हमारे यहां बालभावसे सेवा होती है। जिस प्रकार जोरसे डांटने पर बालक डर जाता है तो हमारे पुष्टिप्रभु तो हैं ही बालस्वरूप। बालभाव को ध्यानमें रखते हुए विशेष आलापचारी या अधिक तान-पल्टा सन्मुखकी कीर्तनसेवामें नहीं किया जाता। मंगलाके समय मधुर तंतुवाद्यों के मधुरगानसे प्रभुको जगाते हैं, पखावज आदि तालवाद्य नहीं बजते। इसका यह अर्थ नहीं कि कीर्तन बेताला या लयरहित गाया जाय।

आशा हैं कि उपरोक्त बातोंको ध्यानमें रखकर कीर्तन सेवा की जाय तो अवश्य ही आनंदकी अनुभूति एवं प्रभुके निकट होनेका सौभाग्य मिलेगा।

जमुना प्रसाद शर्मा

॥ श्री हरिः ॥

आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद

षड्ऋतुओंके कीर्तनकी केसेट मालाका
प्रथम मोती

“श्यामघटा घिर आई”

वर्षाकालीन २२ कीर्तनोंका संपुट; दो केसेटोंका सेट

*

षड्ऋतुओंके कीर्तनकी केसेट मालाका
द्वितीय मोती

“शीतकाल सुहावनो”

शीतकालीन ५० पदोंका संग्रह;
मंगला से सेन पर्यंतका ४ केसेटोंके सेटमें पुस्तिका सह उपलब्ध है।

*

षड्ऋतुओंके कीर्तनकी केसेट मालाका
तृतीय मोती

“ग्रीष्म युगल सुखदायी”

ग्रीष्म ऋतु के २८ पदोंका संग्रह;
मंगला से शयन पर्यंतका दो केसेटों का सेट पुस्तिका सह उपलब्ध है।

*

आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद एवं श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट
द्वारा प्रकाशित

“कीर्तन प्रवेशिका”

पुष्टिभक्ति संगीत पाठ्यक्रम नं. १

“ कीर्तन प्रबोध”

पुष्टिभक्ति संगीत पाठ्यक्रम नं. २

कीर्तनकार : **श्री जमनाप्रसादजी शर्मा**

भावोद्बोधन : **श्रीमती कल्पनाबेन शाह**

प्राप्तिस्थान :

आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद
जी/२, सीताराम बिल्डींग,
पल्टन रोड, मुंबई - ४०० ००१.

परिषदकी सभी शाखाओंमें उपलब्ध है ।

श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट
श्री जीतुभाई शाह,
श्री यमुना मार्केटींग,
गोपाल निवास, १७६, लोहार चाल,
मुंबई - ४०० ००२.

Typesetting : Creative Compugraphics, Mumbai. ©: 385 9603